रिसाला

अल - मेआर

लेखक

हज़रत बन्दगी मियाँ

सय्यद ख़ुदंमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी०

अनुवादक

श्री शेख़ चाँद साजिद

इदारतुल इल्म महेदवियह इस्लामिक लाइबररी

अंजुमने महेदवियह बिलडिंग, चंचलगुडा,

हैदराबाद - ५०० ०२४.

अल - मेआर

इस रिसाले को 'उम्मुर-रिसाला' , 'माअरिफ़ते महेदी' और 'मक़सदे अव्वल' भी कहा जाता है। कहा जाता है कि हज़रत सय्यद ख़ुंदमीर रज़ी० ने गुजरात के बादशाह को महेदी अले० की तस्दीक़ के लिये निमन्त्रण पत्र लिखा , और उस दौर के एक महान विद्यावान मुल्ला मुईनुद्दीन पटनी को सुबूते महेदियत में यह रिसाला लिख कर भेजा। रिसाला पूरा होने के बाद आप रज़ी० ने फ़र्माया कि ''यह रिसाला स्वर्ण जल से लिख रखने के योग्य है।'' चुनांचे हुमायूँ बादशाह ने जब यह रिसाला देखा तो उसे स्वर्ण जल से लिखा कर अपने पुस्तकालय में रखा ।

मक़सदे सानी

इस में भी उसूल और अक़ाइदे महदवियह बयान किये गये हैं , और ईमान के घटने और बढ़ने के विषय को समझाया गया है। यह रिसाला अरबी भाषा में है।

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। हम उसी से मदद् चाहते हैं और उसी पर भरोसा करते हैं। तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिये है जिस के हाथ में बादशाहत है, वह जिसको चाहता है देता है, और उस ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन को फैलाया और आकाश को बलन्द किया। बुज़र्ग है वह ज़ात उसके सिवा कोई माअबूद (ख़ुदा) नहीं, वही नेमतें प्रदान करता है और अपने बन्दों से जंग की सख़्ती और अकाल के नुक़सान को दूर करने वाला है। उसकी निरंतर नेमतों पर हम उसकी हम्द (प्रशंसा) करते हैं और उसके विशाल एहसानात पर हम उसका शुक्र अदा करते (आभारी) हैं। दरूद नाज़िल हो उसके रसूल मुहम्मद सल्ला० पर जो रौशन शरीअत वाले और वाज़ेह और साफ़ तरीक़े वाले हैं, और तमाम रसूलौं और नबीयौ में अकमल (परिपूर्ण) हैं, जिन के हाथ में हम्द का झंडा रहेगा और आदम अले० और तमाम अम्बिया क़यामत के दिन आप सल्ला० के झंडे के नीचे रहेंगे। अल्लाह दरूद नाज़िल करे आप सल्ला० पर और आप की श्रेष्ठ आल (सन्तान) पर।

हम्द-व-सलात के बाद हज़रत महेदी अले० और आपके अस्हाब रज़ी० की मारिफ़त (परिचय) के बयान में कुछ बातें इन पन्नों पर लाइ गयी हैं, इस लिये कि बाज़ लोग जो हज़रत सैयद मुहम्मद (महेदी अले०) के अस्हाब रज़ी० से बेख़बर हैं और उनको नाशाइस्ता (अशोभनीय) औसाफ़ से मन्सूब करते हैं और उनके प्रति बद गुमानी करते हैं और फ़ासिद (दूषित) अक़ीदा रखते हैं और उन पर बातिल अहकामात

लगाते हैं और नहीं जानते कि उनकी हालत क्या है।

ए मित्र जानले, कि अल्लाह तआला जिसको चाहता है कि अपनी ओर आने का मार्ग दिखलाए और अपना मुक़र्रब (समीपस्थ) बनाए तो उसको उसके ख़ाहिशात और मुरादों (अभिलाषा) से निकाल देता है और लोगों को उसपर नियुक्त करता है और उसका शत्रु बनादेता है और लोगों के द्वारा उसको दुःख और कष्ट पहुंचाता है ताकि उसके दिल से इस संसार के संबंध, अल्लाह के सिवा दूसरी चीज़ो से मुहब्बत और लोगों की चाहत निकल जाए और वह अल्लाह की मारिफ़त और अल्लाह की मुहब्बत के लिये वक़्फ़ (समर्पण) होजाए, जैसा कि अल्लाह का तालिब कहता है।

या अल्लाह तमाम मख़लूक को मेरा विरोधी बनादे
और तमाम दुन्या के लोगों से मुझको अलग करदे
मेरे दिल के रुख़ को हर तरफ़ से फेरदे
मुझे एक ही मार्ग पर और एक दिशा में करदे

अल्लाह की जानिब से जवाब मिलता है -

जिसके साथ तू मिलना - जुलना चाहता है, जानले कि उस से तुझ को सुख नहीं मिलेगा मैं तुझको परेशान करूंगा क्योंकि तू हमारा है।

मख़लूक़ को उसके विरुद्ध नियुक्त करने में हिक्मत (उपाय) यह है कि मनुष्य की फ़ितरत (स्वभाव) इस प्रकार है कि भले ही वह चाहता है कि मख़लूक़ से मूंह फेरले और अपने हम-जिंसों से अलग होजाए, लेकिन फ़ित्रत के कारण अपने जैसों की तरफ़ ही मैलान (अभि रुचि) होता है, मगर अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से उसके हम-जिंसों से अलग करदेता है और अपनी रज़ा (प्रसन्नता)

पर क़ाइम रखता है, चुनाँचे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के हक़ में अल्लाह तआला ने फ़र्माया है

ولو لا ان ثبتناک لقد کدت ترکن الیھم شیئا قلیلا (الاسراء۷۴) *और अगर हमने तुम्हें जमाए न रखा होता तो क़रीब था कि तुम उनकी तरफ़ कुछ झुक पड़ते* (बनी इस्त्राइल - ७४)

जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० के लिये मख़लूक़ की तरफ़ झुक जाना मुम्किन है तो दूसरे लोग मख़लूक़ से किस तरह अलग रह सकते हैं। अवश्य अल्लाह तआला मख़लूक़ को अपने तालिब (अभिलाषी) पर नियुक्त करता है और मख़लूक़ को अपने तालिब का शत्रु बनाता है ताकि तालिब अपने दिल के रुख़ को मख़लूक़ की तरफ़ से फेरकर ख़ालिक़ की तरफ़ लाए। जैसा कि अल्लाह तआला अपने पैग़मबरौं के हक़ में फ़र्माता है

وکذلک جعلنا لکل نبی عدوا شیاطین الانس والجن یوحی بعضھم الی بعض زخرف القول غرورا(الانعام۱۱۳)

(और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन बनाये, मनुष्यों में के शैतानों को और जिन्नों में के (शैतानों को) भी जो चिकनी-चुपड़ी बात एक दूसरे के दिल में डाल कर धोके में डालते हैं) (अल-अनआम-११३)। चूंकि महेदी अले० और आपके अस्हाब रज़ी० हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० के ताबे हैं तो अवश्य मख़लूक़ उनके साथ भी अदावत (शत्रुता) करती है और विरोध प्रकट करती है, क्योंकि जब मत्बूअ (जिसका अनुसरण किया जाता है) का हाल यह है कि अल्लाह तआला ने अपने कलाम में सुचना दी है कि واذا یمکربک الذین کفروا لیثبتوک او یقتلوک او یخرجوک ویمکرون ویمکر اللہ واللہ خیر الماکرین(الانفال۳۰)

(और (वह समय याद करो) जब काफ़िर लोग तुम्हारे बारे में चालें चल

रहे थे कि तुम्हें क़ैद करदें या तुम्हें क़त्ल कर डालें या तुम्हें निकाल दें, और वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह अपनी चाल चल रहा था: और अल्लाह सबसे उत्तम चाल चलने वाला है (अल - अनफ़ाल - ३०)। इसी प्रकार ताबे (महेदी अले०) पर भी वही बात लाज़िम आएगी और यह बात महेदी अले० की सदाक़त (सत्यता) की दलील है, और दूसरी दलीलें जो पुस्तको से मालूम हुवी हैं बहुत हैं लेकिन तवालत (आयाम) के खौफ़ से संक्षिप्त रूप में बयान किया गया है और चंद कलिमात इन पन्नों पर लाये गये हैं ता कि जो शख़्स उनसे (अस्हाबे महेदी अले० से) बद गुमानी (बुरी धारणा) करता है और उनपर झूटे आरोप लगता है उसको तौबा करने और अपने विचार बदलने का औसर प्राप्त हो और विरोधी यह जानले कि जो नाशाइस्ता, सिफ़त (अशौभनीय गुण) हज़रत सैयद मुहम्मद महेदी अले० के अस्हाब रज़ी० के साथ मन्सूब (संबंधित) कर रहा है वह केवल ख़ता (दोष) है।

जो शख़्स यह कहता है कि हज़रत सैयद मुहम्मद महेदी अले० के सहाबा रज़ी० नाक को ज़िक्र का आला (साधन) बनाए हैं और उसके विरुद्ध कई पुस्तकों से दलीलें पेश करता है, और कहता है कि इमाम क़ुशैरी रहे० ने हज़रत अय्यूब अले० के क़िस्से के संबधं में ऐसा कहा है और फ़लाँ शख़्स ऐसा कहता है, वह यह नहीं जानता कि हज़रत सैयद मुहम्मद महेदी अले० के सहाबा रज़ी० की क्या हालत है और वे किस मार्ग पर चलते हैं और तमाम अहवाल और अफ़आल में किसकी पैरवी करते हैं। ऐ मित्र जानले कि हज़रत सैयद मुहम्मद महेदी अले० के सहाबा रज़ी० का उद्देश्य तमाम अक़वाल (वचन) ओर अफ़आल (कर्म) में केवल यही है कि अल्लाह की पुस्तक और पैग़म्बरौं का

अनुसरण प्राप्त हो और अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ला० के आदेश और अहले दीन के अक़वाल पर अमल किया जाये। इस लिये ज़िक्र में भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० का अनुसरण करते हैं और अल्लाह की पुस्तक के अनुसार अमल करते है। अल्लाह तआला फ़र्माता है واذکر ربک فی نفسک تضرعا وخیفة ودون الجهر من القول بالغدو والاصال ولا تکن من الغافلین (الاعراف ۲۰۵)

(अपने रब को प्रातः काल और सन्ध्या समय याद किया करो, अपने जी में गिड़गिड़ाते और डरते हुवे, और धीमी आवाज़ के साथ। और उन लोगौं में से न हो जाओ जो अचेतावस्था में पड़े हुवे हैं (अल - आराफ़ - २०५) । हज़रत ज़करीया अले० के क़िस्से से भी हक़ तआला अपने कलाम में सूचना देता है اذ نادیٰ ربه نداء خفیا (مریم ۳) *(जबकि उसने (ज़करीया अले० ने) अपने रब को चुपके - चुपके पुकारा)* (मरयम-३)। साहिबे मदारिक ने इस आयत की तफ़सीर में कहा है ''यानि पुकारा अल्लाह को गुप्त रूप से जैसा कि उसी तरह पुकारने का हुक्म है और यह तरीक़ा रिया कारी (ढोंग) से दूर और पवित्रता से अधिक निकट है।'' जब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० और दूसरे पैग़म्बरौं को ज़िक्रे ख़फ़ी का आदेश दिया गया है तो मालूम हुवा कि ज़िक्रे ख़फ़ी ही तमाम अज़्कार से ज़ियादा बेहतर (उत्तम) है और ज़िक्र का आला दिल है और जब तक अल्लाह का ज़िक्र दिल में स्थापित न होजाए ज़ाकिर ग़फ़लत (अचेतना) की सिफ़त से अलग नहीं होता। अल्लाह के ज़िक्र को दिल में स्थापित करना सांसौं की हिफ़ाज़त के बग़ैर असंभव है। पास-अन्फ़ास के ज़िक्र के बग़ैर दिल ख़त्रात (भ्रांति) और औहाम (संदेह) से पाक नहीं होता, क्योंकि सांस के ठहरने और उसके उठने की जगह दिल ही है। हज़रत

अय्यूब अले० का क़िस्सा जो इमाम कुशैरी ने अपनी पुस्तक में बयान किया है वह क़िस्सा ज़िक्रे ख़फ़ी और पास - अन्फ़ास के ज़िक्र के विरुद्ध दलील नहीं होसकता क्योंकि पास-अन्फ़ास के ज़िक्र के बग़ैर तमाम औक़ात की शमूलियत के साथ अल्लाह का ज़िक्र मुयस्सर (उपलब्ध) नहीं होता और अल्लाह का ज़िक्र फ़र्ज़े दवाम (निरंतर ज़िक्र फ़र्ज़) है। अल्लाह तआला ने फ़र्माया है فاذکروا اللہ قیاما وقعودا وعلٰی جنوبکم(النساء۱۰۳) *(खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह का ज़िक्र करते रहो* (अन-निसा - १०३)।

जब तक साँस (श्वास) की हिफ़ाज़त न करे यह फ़र्ज़ अदा नहीं होता। साँस का संबंध केवल नाक से नहीं है बल्कि उसको तमाम आज़ा (अंग) में दख़ल है। इसी कारण तमाम सलिकीने राहे हक़ और तालिबाने ज़ाते मुतलक़ ने ज़िक्रे ख़फ़ी (गुप्त ज़िक्र) को तमाम अज़्कार से बेहतर जाना है, क्योंकि ज़िक्रं ख़फ़ी और ज़िक्र पास - अन्फ़ास के बग़ैर ज़ाकिर का वजूद रिया कारी (ढोंग) और ख़ुद बीनी (घमंड) की गन्दगी से पाक नहीं होता और ज़िक्रे दवाम हासिल नहीं होता। अगर अल्लाह का ज़िक्र ज़बान से करेगा तो कभी ऐसा होता है कि ज़ाकिर बातों में और कभी खाने सोने में मश्ग़ूल होता है, और जब किसी चीज़ में मश्ग़ूल होकर अल्लाह के ज़िक्र से रुक जाता है तो उसका शुमार ग़ाफ़िलों में होता है, और ग़फ़लत की सिफ़त मोमिन के लाइक़ (योग्य) नहीं, बल्कि यह सिफ़त उन लोगौं की है ज़िनके प्रति अल्लाह तआला ने अपने कलाम में सूचना दी है कि

ولقد ذرانا لجھنم کثیرامن الجن والانس لھم قلوب لا یفقھون بھا ولھم اعین لا یبصرون بھا ولھم اذان لا یسمعون بھا اولئک کالانعام بل ھم اضل اولئک ھم الغافلون(الاعراف۱۷۹)

(और निश्चय ही हमने बहुत से जिन्नों और मनुष्यों को जहन्नम ही के

लिये फैला रखा है, उनके पास दिल हैं वे उनसे समझते नहीं, और उनके पास आँखें हैं, व उनसे देखते नहीं, और उनके पास कान हैं वे उनसे सुनते नहीं। वे पशुओं की तरह हैं - बल्कि यह उनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं। यही लोग हैं जो अचेतावस्था में पड़े हुवे है (अल-आराफ़ - १७९)। इमाम ज़ाहिद ने अपनी तफ़सीर में लिखा है कि अल्लाह का ज़िक्र फ़र्ज़े दवाम है, किसी समय और किसी हाल में भी यह ज़िम्मेदारी साक़ित (समाप्त) नहीं होती, क्योंकि ज़िक्रे दवाम किसी शर्त से मश्रुत नहीं है जबकि दूसरे फ़राइज़ मश्रुत (शर्त से युक्त) हैं।

इस से भी मालूम होता है कि अल्लाह का ज़िक्र तमाम फ़राइज़ में अहम-तरीन (महत्वपूर्ण) उद्देश्य है। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि واقم الصلوٰة ان الصلوٰة تنهیٰ عن الفحشاء والمنكر ولذكر الله اكبر (العنكبوت۴۵) *और नमाज़ क़ायम करो, निश्चय ही नमाज़ अश्लीलता और बुरे कर्म से रोकती है, और अल्लाह का ज़िक्र सब से बाड़ा है* (अल-अनकबूत-४५)। ए मित्र जानले कि ज़िक्रे दवाम (निरंतर ज़िक्र) के बग़ैर नफ़्स का तज़्किया (शुद्धि), तज्रीद (एकांत) और तफ़रीद (अनुपमता) प्राप्त नहीं होते और दिल से परेशान ख़याली दूर नहीं होती, और मानसिक विश्वास प्राप्त नहीं होता। शैतानी भ्रम और नफ़सानी ख़ाहिशात और इच्छाओं से मनुष्य मुक्ति नहीं पासकता। इस लिये अल्लाह का ज़िक्र इतना निरंतर करना चाहिये कि औक़ात में से किसी वक़्त और हालात में से किसी हाल में अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली न रहे। आने में, जाने में, खाने में, सोने में, सुन्ने में और कहने में बल्कि तमाम हरकात-व-सकनात (गतियों) में ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहे ताकि दिल बेकारी में न गुज़रे, बल्कि दम् (श्वास) से वाक़िफ़ रहे ताकि कोई

दम ग़फ़लत से न निकले। नबी करीम सल्ला० ने फ़र्माया कि كل نفس يخرج بغير ذكر الله فهو ميت *जो साँस अल्लाह के ज़िक्र के बग़ैर निकलती है वह मुर्दा है।* हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० ने भी उसी साँस की तरफ़ इशारा फ़र्माया है, क्योंकि साँस की हिफ़ाज़त के बग़ैर ज़िक्रे दवाम हासिल नहीं होता और मुर्दनी की सिफ़त से अलग नहीं हो सकता और दिल से ग़फ़लत नहीं जाती। अगर आप मर्दे आरिफ़ हैं तो साँसों की रक्षा करो, दोनों जहाँ की बादशाहत तुम्हारी एक ही साँस में तुम्हारी मिल्क (संपत्ति) हो जाएगी।

क़त्आ

उम्र की हर साँस जो गुज़र रही है वह एक मोती है
उसका मूल्य दोनों जगत का शुल्क है
तु उस ख़ज़ाने (कोष) को मुफ़्त में बरबाद करदेना पसंद मत कर
अगर ऐसा करेगा तो ख़ाक में ख़ाली हाथ और निर्धन जाएगा।

रसूलुल्लाह सल्ला० के क़ौल (वचन) में हिकमत (ज्ञान) यह है कि साँस दिल और तमाम आज़ा (अंगों) मे प्रवेश करती है। जब साँस अल्लाह के ज़िक्र के साथ तमाम अंगों में प्रवेश करती है और ज़िक्र के फ़ैज़ (प्रभाव) से जीवन का प्रभाव तमाम अंगों में पैदा होता है तो ज़िक्र करने वाले के दिल में साँस ईमान के पेड़ को उगाती है। नबी करीम सल्ला० ने फ़र्माया है कि لا اله الا الله ينبت الايمان كما ينبت الماء البقلة *लाइलाह इल्लल्लाह इमान को ऐसा ही उगाता है जैसा कि पानी तरकारी को उगाता है।*

ए मित्र जान ले कि उद्देश्य यह है कि साँस की रक्षा के ज़रीये

अल्लाह का ज़िक्र दिल में स्थापित होजाए और साँस अल्लाह के ज़िक्र के साथ अंदर जाये और बाहर आये, चाहे मुंह से हो या नाक से, यह दो रास्ते साँस के हैं। साँस के गुज़रने से नाक ज़िक का आला नहीं होती, क्योंकि साँस मुत्लक़ (मुक्त) है। सैयद मुहम्मद (महेदी अले०) के सहाबा रज़ी० का लक्षय यह है कि साँस की रक्षा के ज़रीये से अल्लाह का ज़िक्र दिल में स्थापित होजाय और अल्लाह का ज़िक्र से मानसिक संतोष प्राप्त हो, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है الذين امنوا وتطمئن قلوبهم بذكر الله الا بذكر الله تطمئن القلوب (الرعد۲۸) *ऐसे ही लोग हैं वे जो ईमान लाये और जिनके दिलों को अल्लाह के ज़िक्र से सन्तोष होता है। सुन लो! अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को सन्तोष होता है* (अर-रअद-२८)। *मुहज़्ज़ब* मे लिखा है कि ज़िक्र और ज़िक्रा का अर्थ याद करना है। हाँ ऐसा ही है लेकिन जान्ना चाहिय कि ज़िक्र क्या है और मज़्कूर (जिसका ज़िक्र किया जा रहा है) कौन है। ज़िक्र यह है कि उसके माध्यम से अल्लाह के सिवाय दूसरी चीज़ों का वुजूद (अस्तित्व) मिट जाय और ज़ाकिर को मज़्कूर के सिवाय किसी चीज़ का शऊर (ज्ञान) न रहे, न अपना, न अपने ज़िक्र का, न ग़ैर के वुजूद का, बल्कि अल्लाह वाहिद के सिवाय कोई चीज़ बाक़ी न रहे। अल्लाह तआला फ़र्माता है واذكر ربك اذا نسيت (الكهف۲۴) *जब भूल जाओ तो अपने रब का ज़िक्र करो* (अल-कहफ़-२४), यानि जब तुम अपने नफ़्स को और अल्लाह के सिवाय दूसरी चीज़ों को भूल जाओ। जब बेख़ुदी की हालत में यार ही न समाता है तो दूसरे कहाँ समाऐंगे।

तू ज़िक्र से क्या चाहता है मज़्कूर को तलब कर
तमाम फ़िक्र का ख़ुलासा यही है।

रुबाई

जिसका व्यवहार फ़ना है और नियम फ़क़्र - व - फ़ाक़ा है
उसके लिये न यक़ीन है न मारिफ़त और न दीन है
जब ज़ाकिर मध्य से निकल गया तो फिर ख़ुदा ही ख़ुदा रहा
जब फ़क़्र तमाम हुवा तो वह अल्लाह है यह मत्लब है।*

यह सौभाग्य कलिमा *ला इलाह इल्लल्लाह* के बग़ैर हासिल नही होता, जिसमें ग़ैर के वुजूद के फ़ना की इच्छा और ज़ाते हक़ का इस्बात (प्रमाणित करना) है। इसी लिये रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया है कि ज़िक्र में अफ़ज़ल ज़िक्र *ला इलाह इल्लल्लाह* لا اله الا الله है । आँहज़रत सल्ला० ने यह बी फ़र्माया कि मैं ने और मुझ से पहले सब पैग़म्बरौं ने जो कुछ फ़र्माया है उन सब में अफ़ज़ल (सर्वोच्च) *ला इलाह इल्लल्लाह* का क़ोल है और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० भी अल्लाह तआला की तरफ़ से इसी कलिमे के लिये मामूर (नियुक्त) हुवे हैं, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि فاعلم انه لا اله الا الله (محمد١٩) *(तो (हे मुहम्मद!) जान लो कि कोई इलाह (आराधित) नहीं सिवाय अल्लाह के* (मुहम्मद-१९)। हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० से पहले तमाम अम्बिया जो हुवे हैं उनको भी इसी कलिमे की शिक्षा दी गई है जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है

وما ارسلنا من قبلک من رسول الا نوحی الیه انه لا اله الا انا فاعبدون (الانبیاء٢٥)

(और हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा उसे हमने यही वहय की कि मेरे सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं। मुशरिकों के हक़ में अल्लाह तआला ने फ़र्माया है اذا قیل لهم لا اله الاالله یستکبرون (الصّٰفّٰت٣٥) *(जब इन*

*हज़रत शाह क़ासिम रहे० ने लिखा है कि इमामुना महेदी मौऊद अले० ने फ़र्माया है कि ''जब फ़क़्र पूर्ण हुवा वह अल्लाह है'' का अर्थ यह है कि वह अब्दल्लाह यानि अल्लाह का बंदा है।

(मुशरिकों) से कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं, तो वे तकब्बुर (घमंड) करते थे)।

अर्थात अल्लाह के कलाम और रसूलुल्लाह सल्ला० के वचन से मालूम हुवा कि तमाम अम्बिया और औलिया के लिये इसी कलिमा *ला इलाह इल्लल्लाह* का ज़िक्र रहा है। हज़रत रिसालत पनाह सल्ला० ने भी इसी क़द्र फ़र्माया है और हज़रत सैयद मुहम्मद महेदी अले० और आपके सहाबा रज़ी० ज़िक्र के विषय में अम्बिया और औलिया की मुवाफ़क़त (अनुकूलता) करते हैं, और तमाम अफ़्आल (कर्म) और अक़्वाल (वचन) में अल्लाह की किताब की पैरवी (अनुकरण) करते हैं। अब उसका हाल किस प्रकार का होगा जो यह कहता है कि *ला इलाह इल्लल्लाह* कहने में काफ़िरौं की अनुकूलता होती है। जो लोग तमाम अहवाल में अल्लाह की प्रसन्नता के इच्छुक हैं और لا اله الا الله محمد رسول الله *ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर - रसूलुल्लाह* का कलिमा जबान से कहते है और दिल में तस्दीक़ करते हैं, अल्लाह की किताब और अल्लाह के रसूल सल्ला० के वचन से जो फ़राइज़ साबित हुवे हैं उनको अदा करते हैं, ऐसे लोगौं को कुफ्र और कुमार्गता से संबंधित करना ख़ुद गुमराही है। जो व्यक्ति ऐसे लोगौं पर बुरी धारणा रखता है और झूटे आरोप लगाता है, उसको चाहिये कि अल्लाह की किताब में देखे और अपने गुमान से बाज़ आये और तौबा करे। अल्लाह तआला ने फ़र्माया है

يا يها الذين امنوا اجتنبو ا كثيرا من الظن ان بعض الظن اثم(الحجرات۱۲)

हे ईमान वालो। बहुत से गुमान से बचा करो - निस्सन्देह कोई - कोई

गुमान गुनाह होता है (अल-हुजुरात-१२) अगर तौबा नहीं करेगा और अपने गुमान से नहीं रुकेगा तो अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करेगा। अल्लाह तआला फ़र्माता है ومن لم يتب فاولئک هم الظالمون(الحجرات۱۱) *और जो कोई तौबा न करे तो ऐसे लोग ज़ुल्म करने वाले हैं* (अल-हुजुरात - ११)। रसूलुल्लाह सल्ला० ने भी फ़र्माया है कि मोमिनों के साथ नेक गुमान रखो।

ए मित्र जानले कि जो शख़्स अल्लाह की तलब में मज़्बूत रहता है और अल्लाह की मुहब्बत में सच्चा होता है तो वह शख़्स भी लोगों की मलामत (निंदा) से ख़ाली नहीं रहता, और अल्लाह तआला विभिन्न प्रकार से उसकी परीक्षा लेता है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है। لتبلون فی اموالکم وانفسکم ولتسمعن من الذین اوتو الکتاب من قبلکم ومن الذین اشرکوا اذی کثیرا وان تصبروا وتتقوا فان ذالک من عزم الامور(ال عمران۱۸۶) *(तुम्हारे माल और तुम्हारे प्राण में तुम्हारी परीक्षा होकर रहेगी, और तुम्हें उन लोगों से जिन्हे तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है और उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया बहुत - सी दुख देने वाली बातें सुननी पड़ेंगी। और यदि तुमने धैर्य से काम लिया और (अल्लाह का) डर रखा तो निस्सन्देह यह महान साहस के कार्यों में से होगा* (३:१८६)।

इस लिये अल्लाह से प्रेम करने वाले पर लाज़िम है कि सब्र (धैर्य) करे और बला (आपत्ति) से न डरे और लोगों की मलामत का ख़ौफ़ न करे, ताकि अल्लाह के मित्रों के गिरोह में दाख़िल हो। अल्लाह तआला फ़र्माता है

فسوف یاتی الله بقوم یحبهم ویحبونه اذلة علی المومنین اعزة علی الکافرین

يجاهدون فی سبيل الله لا يخافون لومة لائم(المآئدہ۵۴)

(हे ईमान लाने वालो । जो कोई तुममें से अपने दीन से फिरेगा, तो जल्द अल्लाह ऐसी क़ौम को लायेगा जिससे उसे प्रम होगा और उस क़ौम को अल्लाह से प्रम होगा, ईमान वालों पर नर्म, काफ़िरों पर सख़्त होंगे, अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे (अल-माइदह-५४)

इश्क़ में यकता रह और मख़लूक़ का क्या ख़ौफ़
माशूक़ तो तेरा है दुन्या के सर पर ख़ाक डालदे

ए मित्र जानले कि जब हज़रत सैयद मुहम्मद महदी अले० के सहाबा इस गिरोह से हैं तो अवश्य लोग उनका विरोध करेंगे, जैसा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० और आपके सहाबा रज़ी० को कष्ट और दुःख देते थे, क्योंकि आँहज़रत सल्ला० जो कहते और जो करते थे केवल उसी आदेशानुसार करते थे जो अल्लाह से आपको पहुंचता था, यानि आप का हर क़ौल-व-फ़ेल (वचन-कर्म) अल्लाह की *'वही'* के अनुकूल होता था। अल्लाह तआला फ़र्माता है

وما ينطق عن الهوٰی ان هو الا وحی یوحٰی (النجم۳،۴)

قل انما ا تبع ما یوحیٰ الی من ربی هٰذا بصائر من ربکم وهدی ورحمة لقوم یومنون(الاعراف۲۰۳)

१) *(और वह अपने मन से नहीं कहता । वह एक 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है जो उस पर भेजी जाती है)* (५३:३,४)।

२) *(कहो, मैं तो उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मुझ पर 'वही' की जाती है । यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से और हिदायत और रहमत है उन लोगौं के लिये जो ईमान लाते*

हैं) (७:२०३)।

आँहज़रत सल्ला० 'वही' के अनुकूल जो कहते और करते थे तो लोगों के नफ़्सानी ख़ाहिश (इच्छा) के विरुद्ध पड़ता था, क्योंकि उनपर नफ़्स का घमंड इतना अधिक होता था कि वे किसी को भी अपने समान नहीं समझते थे, और पुस्तक के उस ज्ञान पर जो उनके पास था, उसी पर आनन्दित रहते और घमंड करते थे, और आँहज़रत सल्ला० और आपके सहाबा रज़ी० का मज़ाक़ उड़ाते थे। अहले नफ़्स-व-हवा (विलासी) का यह तरीक़ा हमेशा रहा है। अल्लाह तआला फ़र्माता है

فلما جاء تهم رسلهم بالبينات فرحوا بما عند هم من العلم وحاق بهم ما كانوا به يستهزء ون (المؤمن ۸۳)

(और जब उनके पास उनके 'रसूल' स्पष्ट प्रमाण लेकर आये तो जो ज्ञान उनके पास था उस पर वे इतराते रहे और उसी यातना ने उन्हें घेर लिया जिसकी वे हंसी उड़ाते थे) (४०:८३)।

वे कहते थे कि उम्मी (निरक्षर) लोग क्या इस बात के योग्य हैं। वे हसद और शत्रुता के कारण जाहिल होगये, बावजूद उस ज्ञान के जिसका उनको भ्रम था। इस प्रकार वे अपने रसूल और अपनी पुस्तक से भी इन्कार कर बैठे, क्योंकि उन्होंने कहा कि अल्लाह ने मनुष्य पर कोई चीज़ नहीं उतारी। उनका ऐसे मानव को स्वीकार न करना जो अल्लाह की ओर से सूचना लाता है, इस का कारण यह है कि अधिकतर लोग अपने बाप - दादा के अनुकरण को नहीं छेड़ते और रसूल के साथ अनुकूलता नहीं करते। अल्लाह तआला फर्माता है

وكذلک ما ارسلنا من قبلک فی قرية من نذير الا قال مترفوها انا وجدنا اباء نا على امةوانا على اثارهم مقتدون (الزخرف ۲۳)

(ईसी तरह हमने तुमसे पहले (हे मुहम्मद!) जिस किसी बस्ती में भी कोई सचेत करने वाला (रसूल) भेजा वहाँ के सुख-भोगी लोगों ने यही कहाः हमने तो अपने पूर्वजों को एक पन्थ पर पाया है, और हम उन्हीं के पदचिन्हों पर हैं, उन्हीं के पीछे चलते हैं) (४३:२३)।

अब तक अल्लाह तआला यह सूचना धनवानों और दुन्या के नेताओं के हालात के विषय में देता है, लेकिन अम्बिया के साथ दुर्व्यवहार, उनको क़तल करने और उनको झुटलाने की शरारत इनही साँसारिक नेताओं और संसार के बड़े लोगों से पैदा हुवी है, जो जाह और रियासत (पद और सत्ता) में विशिष्ट हुवे हैं। अल्लाह तआला फ़र्माता है

وكذلک جعلنا فی کل قریة اکابر مجرمیها لیمکروا فیها وما یمکرون الا بانفسهم وما یشعرون (الانعام۱۲۳)

(और इसी तरह हमने हर बस्ती में उसके बड़े-बड़े अपराधियों को लगा दिया है कि वे वहाँ चाल चलें और वे अपने ही साथ चाल चलते है, परन्तु उन्हें इसका ज्ञान नहीं) (६:१२३)।

ऐ मित्र जानले कि जब महेदी अले० हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० और दूसरे पैग़म्बरों के ताबे हैं तो अवश्य दुन्या के बड़े लोगों का गिरोह भी महेदी अले० के साथ शत्रुता और विरोध करता है। मुहीयुद्दीन इब्न अरबी रहे० रिवायत करते हैं कि

اذا خرج هذا الامام المهدی فلیس له عدو مبین الا الفقهاء خاصة لانه لایبقیٰ ریاستهم

''जब इमाम महेदी निकलेंगे तो उनके खुले दुश्मन ख़ासकर आलिमों के सिवाय कोई और न होंगे क्योंकि आलिमों का शासन बाक़ी नहीं रहेगा''। यह बात महेदी अले० की सत्यता का प्रमाण है। इस से मालूम हुवा कि जो शख़्स अम्बिया की पैरवी करेगा वह क़ियामत तक अवश्य लोगों की

ओर से कष्ट से नहीं बचेगा। सैयद मुहम्मद महेदी अले० के अस्हाब भी इसी गिरोह से हैं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० की पैरवी करते हैं, इस लिये अवश्य लोग उनका भी विरोध करते और उनको कष्ट देते हैं और नाशाइस्ता सिफ़ात (अशोभनीय गुणों) से उनको मन्सूब (संबंधित) करते हैं। विरोधी कहते हैं कि सैयद मुहम्मद महेदी अले० के अस्हाब रज़ी० तमाम किताबों के मुन्किर हैं, क़ुरआन की तफ़सीर अपनी राय से करते हैं, कसब (कमाई) को हराम जानते हैं, पूरा कलिमा नहीं पढ़ते, उनमें से हर ऐक ख़ुदा के दीदार का दावा करता है और नाक को अल्लाह के ज़िक्र का आला बनाए हैं।

इन तमाम बातों को उन्होंने सैयद मुहम्मद महेदी अले० के सहाबा से जो संबंधित किया है वह सब झूट है, क्योंकि सहाबा हक़ के तालिब हैं और हक़ की तलब के लिये तमाम किताबों का मुतालआ (अध्ययन) करते हैं। उन किताबों में जो बात अल्लाह की किताब (पवित्र क़ुरआन) और अहादीसे रसूल सल्ला० के मुवाफ़क़ (अनुकूल) पाते हैं उस पर अमल करते हैं। तफ़सीर बिस्राय (अपने विचार से क़ुरआन का विवरण) तो वह होती है कि मुफ़स्सिर को अल्लाह तआला से ज्ञान प्राप्त न हुवा हो बल्कि केवल अपने विचार से तफ़सीर करे, इस हाल में कि ख़ुद नफ़्स और ख़ाहिशे नफ़्सानी की क़ैद में गिरफ़तार है, और क़ुरआन की तफ़सीर अपने हाल के मुवाफ़िक़ बयान करता है। अगरचे क़ुरआन की आयात के लिये शाने-नुज़ूल है लेकिन क़ुरआन के माने (अर्थ) मुतलक़ (नितांत) हैं, यानि हर ऐक के लिये क़ुरआन क़ियामत तक उसके दीन पर हुज्जत (प्रमाण) है।

हज़रत सैयद मुहम्मद महेदी अले० के सहाबा रज़ी० भी अपने

हाल को अल्लाह की किताब के सामने पेश करते है और क़ुरआन की पैरवी का प्रयत्न करते हैं, उसके बाद क़ुरआन का बयान करते हैं, इस नियम के साथ कि वह बयान क़ुरआन के क्रम और लेख से ज़ियादा मुनासिब (सर्वेचित) और ज़ियादा क़रीब (अति निकट) होता है, क्योंकि क़ुरआन के वुजूह (कलाम का उद्देश्य) बहुत से हैं और हर शख़्स अपने हौसले (साहस) के मुवाफ़िक़ समझता है और उसी समझ के मुवाफ़िक़ बयान करता है, और सैयद मुहम्मद महेदी अले० के सहाबा सज़ी० भी (क़ुरआन का) बयान करते हैं और *या अहलल् - किताब* की आयत में अहले किताब से मुराद बनी - इसराईल के उलमा और उनके मानिंद लोगों को लेते हैं।

दूसरा जवाब इस बात का जो वह यह कहते हैं कि सैयद मुहम्मद महेदी अले० के सहाबा रज़ी० कस्ब (कमाई) को हराम जानते हैं। सहाब रज़ी० कस्ब को हराम नहीं जानते, लेकिन अपनी जमाअत के दरमियान कहते हैं कि अल्लाह के तालिब को चाहिये कि जिस काम में मश्ग़ुल हो इन्साफ़ से नज़र करे। अगर वह काम अल्लाह के ज़िक्र और अल्लाह की तरफ़ ध्यान में रुकावट होता है तो उसको छोड़ दे और अपनी ज़ात पर उसको हराम क़रार दे, बल्कि उसको अपना बुत मसझे, जैसा कि नबी करीम सल्ला० ने फ़र्माया कि *जो चीज़ तुझे अल्लाह से फेरे वह तेरा बुत है यानि वह तो ताग़ूत (शैतान) है।* अगरचे कि ख़रीदो फ़रोख़्त, व्यापार, कर्म करना और कमाई शर्अ में हलाल हैं, अल्लाह तआला इन चीज़ों को हलाल करके अपने मित्रों को आज़माता है । बदर के यूद्ध के क़िस्से में जहाँ काफ़िरों की पराजय हुवी और मोमिनों को माले ग़नीमत मिला जो हलाले तय्यब है, आँहज़रत सल्ला० के सहाबा रज़ी० के संबंध

में अल्लाह तआला फ़र्माता है (الانفال۱۷) وليبلى المومنين منه بلاء حسنا *(ताकि मोमिनों को अपने एहसानों से अच्छी तरह आज़माए)* - (अल-अनफ़ाल - १७) जब आँहज़रत सल्ला० के सहाबा रज़ी० हलाले तय्यब माले ग़नीमत के पहुंचने से आज़माए गये तो फिर दूसरे लोग जो इन चीज़ों में मश्ग़ूल होते हैं जो शर्अ में हलाल हैं तो इस आज़माइश (परीक्षा) से किस तरह बच सकें, बल्कि *बलाए - हसना* (अच्छी परीक्षा) जो मुराद के मुवाफ़िक़ है उन आज़माइशों से बड़ी है जो मुराद (उद्देश्य) के मुख़ालिफ़ हैं, क्योंकि हलाल को भी छोड़ देना हर शख़्स का काम नहीं है, बल्कि यह गुण आँहज़रत सल्ला० के सहाबा रज़ी० और आपके बाज़ ताबईन का है कि अल्लाह के सिवा हर चीज़ को पीठ पीछे डाल देते हैं और अल्लाह के सिवाय किसी चीज़ में मश्ग़ूल नहीं होते, क्योंकि रिज़्क़ (जीविका), जीवन, सुख और चैन मुहिब्ब (प्रेमी) के लिये महबूब (प्रियतम) की तरफ़ से है। नबी करीम सल्ला० ने फ़र्माया कि *मोमिनों के लिये अल्लाह के दीदार के सिवाय राहत (सुख) नहीं।* जब प्रेमी का हाल यह है कि हमेशा अपने प्रियतम के लिये हैरान - परेशान रहता है तो फिर वह किसी चीज़ मे किस तरह मश्ग़ुल होगा। इस से मालूम हुवा कि मोमिन रिज़्क़ की तलब में अल्लाह की हुज़ूरी छोड़कर किसी चीज़ में मश्ग़ूल नहीं होता और रसूलुल्लाह सल्ला० की सुहबत से बाज़ नहीं आता। जो लोग रिज़्क़ की तलब के लिये अल्लाह की हुज़ूरी और अल्लाह के रसूल सल्ला० की सुहबत से बाज़ रहे उनके संबंध में अल्लाह तआला फ़र्माता हैं

واذا راوا تجارة اولهوانِ انفضوا اليها وتركوک قآئماط قل ما عند الله خير من اللهو ومن التجارة والله خير الرازقين (جمعة۱۱)

(और वे कोई तिजारत या कोई तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर निकल पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ देते हैं। (हे नबी।) कह दोः जो -कुछ अल्लाह के पास है वह तमाशे और तिजारत से कहीं उत्तम है, और अल्लाह बहुत ही अच्छा रोज़ी देने वाला है) (अल - जुमुआ-११)
रसूलूल्लाह सल्ला० ने भी फ़र्मायाी कि रज़्ज़ाक़ (अन्नदाता) को तलब करो रिज़्क़ को तलब न करो क्योंकि रिज़्क तुम्हारा तालिब (इच्छुक) है और रज़्ज़ाक़ तुम्हारा मत्लूब (प्रेम पात्र) है।

इस तरह अल्लाह के कलाम और रसूलुल्लाह सल्ला० के वचन से मालूम हुवा कि तमाम मोमिनों पर अल्लाह की तलब फ़र्ज़ है, रिज़्क़ की तलब फ़र्ज़ नहीं, क्योंकि उनको पैदा करने में अल्लाह का उद्देश्य यह है कि वे अल्लाह की माअरिफ़त (पहचान) हासिल करें और अल्लाह की इबादत करें, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़र्माया وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون(الذاريات٥٦) *(और मैं ने जिन्न और मनुष्य को केवल इसलिये पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें)* (अज़्ज़ारियात - ५६) अब जो मनुष्य अल्लाह की इबादत को और अल्लाह की माअरिफ़त को पीठ पीछे डालकर जीविका की तलब को सामने रखा हो तो उसका क्या नाम रखेंगे और उसको किस क़बीले (समुदाय) से पुकारेंगे। अवश्य वह उन ही लोगौं में शुमार होगा जिनके संबधं में अल्लाह तआला ने अपने रसूल मुहम्मद मुसाफ़ा सल्ला० को मुख़ातब (संबोधित) करके फ़र्माया ذرهم ياكلوا ويتمتعوا ويلههم الامل فسوف يعلمون(الحجر٣) *(छोड़ो इन्हें कि यह खायें और मज़े उड़ायें, और आशा इन्हें भुलावे में डाले रहे। इन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा)* (१५:३)

जिन लोगौं के संबंध में मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० को ऐसा हुक्म होता है तो यह लोग कहाँ और अल्लाह की माआरिफ़त और मुहब्बत् कहाँ? क्योंकि यह लोग इरादे (संकल्प) को दुन्या से ऐसा जोड़ लिये हैं और दुन्या को ऐसा मज़बूल पकड़े हुवे हैं कि हरगिज़ दुन्या से मुंह नहीं फेरते और अल्लाह की तरफ़ रुख़ नहीं करते और अल्लाह की आयतों में हरगिज़ नज़र नहीं करते, क्योंकि यह लोग (दुन्या के तालिब) अल्लाह के दीदार की कोई आशा नहीं रखते । अल्लाह तआला फ़र्माता है ان الذین لا یرجون لقائنا ورضوا بالحیٰوۃ الدنیا

واطمانوا بھا والذین ھم عن آیاتنا غافلونo اولٰئک ماواھم النار بما کانوا یکسبون(یونس ۸۷)

(जो लोग हमारे दीदार की आशा नहीं रखते और वे दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये हैं और उसी में उन्हें सन्तोष हो गया है, और जो लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं, यह वे लोग हैं जिनका ठिकाना आग (जहन्नम) है, उसके बदले में जो वे कमाते रहे) (१०:७)

अब अगर कोई शख़्स ऐसे लोगौं के सामने अल्लाह के दीदार (दर्शन) का दावा करता है और अल्लाह की माअरिफ़त और मुहब्बत की बातें करता है तो अवश्य यह लोग उस से शत्रुता और विरोध करेंगे, बल्कि उसको गुमराह (पथभ्रष्ट) और दीवाना कहेंगे। *फ़ुतूहाते मक्किया* * में महेदी अले० के संबंध में इस तरह बयान किया गया है: ''जब महेदी अले० उन लोगौं के मज़्हब के ख़िलाफ़ हुक्म करेंगे तो वह लोग उनको अवश्य गुमराह समझेंगे, क्योंकि उनका एतक़ाद यह है कि इजतिहात का ज़माना समाप्त होगया और उनके इमामौं के बाद कोई व्यक्ति ऐसा नहीं पाया जाता जो इजतिहाद का दर्जा रखता हो, और जो व्यक्ति अहकामे शरीअत के अनुकूल अल्लाह की माअरिफ़त का दावा करता है तो

उनके पास दीवाना और फ़ासिदुल - ख़याल (अशुद्ध विचार रखने वाला) है। वह लोग उसकी ओर ध्यान नहीं देते''।

ऐ मित्र जानले कि जब महेदी अले० और आपके सहाबा रज़ी० उस क़बीले से हैं जो अल्लाह के दीदार और अल्लाह की माअरिफ़त और मुहब्बत की बातें करते हैं तो अवश्य ज़माने के उलमा (दुनिया के अभिलाषी) उनको गुमराही से संबंधित करते हैं और अपनी जहालत (मूर्खता) के कारण उनसे शत्रुता करते हैं। यह बात मश्हूर है कि आदमी अपनी जहालत के कारण दुश्मनी मोल लेता है, और जाहिल आदमी अगर अल्लाह के दीदार से इनकार करता है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि मनुष्य का इल्म (ज्ञान) ही ख़ुद हिजाब (परदा) होता है (तो फिर जहल (अज्ञान) क्यों हिजाब न होगा)। आँहज़रत सल्ला० ने फ़र्माया कि *इल्म अल्लाह का बड़ा हिजाब है।* यह हिजाब उस समय तक दूर नहीं होता जब तक कि मनुष्य मनुष्यता की क़ैद से पूरी तरह से मुक्त न हो जाये। एक आरिफ़ (ब्रहमज्ञानी) कहता है।

तु कहता है ज्ञान और बुद्धि से ख़ुदा की खोज करूंगा
तू नादीदा मनुष्य है मैं तुझको क्या कहूँ
जहाँ उस दम (श्वास) की पहुंच है
वहाँ ज्ञान और बुद्धि बड़ा परदा हैं
ऐसा ज्ञान तलब कर जो तेरे साथ रहे
वह दम तलब कर जो तुझको तेरी ख़ुदी (अभिमान) से बचाये
जबतक तु कर्तव्य और माअरिफ़त का ज्ञान प्राप्त नही करेगा

* फ़ुतूहाते मक्किया लेखक ह० मुहियुद्दीन इब्ने अरबी (दे६३८ हिज्री - १२४०)

वास्तव में अल्लाह की सिफ़ात को नहीं जानेगा।

यानि आदमी जब तक बशरियत (मनुष्यता) की क़ैद से निकल न जाय और मुक्त न होजाय और ''अल्लाह के अख़लाक़ पैदा करो'' की शान हासिल न करे वह अल्लाह की माअरिफ़त के योग्य न होगा। एक आरिफ़ ने कहा

अपनी ज़ात से कोई शख़्स ख़ुदा को न पहचान सका
उसकी ज़ात को उसी से पहचान सकते हैं
नफ़्स, अक़्ल और हवास के बा-वजूद
ख़ुदा शनास (ख़ुदा को पहचान्ने वाला) कैसे होसकते हैं।

इन आरिफ़ों के अक़वाल (कथन) से मालूम हुवा कि जो शख़्स अल्लाह के दीदार और अल्लाह की माअरिफ़त का तालिब (इच्छुक) है तो उसको चाहिये कि ख़ुदी (अहंवाद) से बाहर आये और *मरने से पहले मरो* का रुत्बा हासिल करे। नबी करीम सल्ला० ने फ़र्माया है कि *'तुम में से कोई मरने तक अपने रब्ब को नहीं देखेगा'।* इस विषय में मशाइख़ीन के इजमाअ (सम्मती) का ज़िक्र जो पुस्तक 'ताअरीफ़' में आया है कि ''अल्लाह दुनिया में नहीं देखा जाता और कोई मख़लूक़ उसको नहीं देखती'', इस कथन को बाज़ नादान लोग दीदार के ख़िलाफ़ दलील ठहारते हैं, और नहीं जानते कि यह कथन तालिबाने हक़ की तरग़ीब (प्रेरित करने) के लिये है। इसका अर्थ यह है कि जो कीई ख़ुदा का और ख़ुदा के दीदार का तालिब (इच्छुक) हो तो उसको चाहिये कि दुनिया और दुनिया वालों से हट जाये, बशरियत की सिफ़त से बाहर निकल जाये और फ़ना का मर्तबा हासिल करे। कहते हैं एक शख़्स मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० के पास आया और सवाल किया या

रसूलुल्लाह सल्ला०! दुनिया क्या है? आँहज़रत सल्ला० ने फ़र्माया कि तेरी दुनिया तेरा नफ़्स है, जब तु नफ़्स को फ़ना करदेगा तो तेरे लिये दुनिया नहीं रहेगी। जब यह हिजाब (दुनिया और दुनिया वाले) उठा दिया जाये तो फिर कोई दूसरी चीज़ ख़ुदा के दीदार में रुकावट नहीं होगी। अल्लाह तआला फ़र्माता है

فمن كان يرجوا لقاء ربه فليعمل عملا صالحا ولا يشرک بعبادة ربه احدا(الکھف۱۱۰)

(तो जो कोई अपने रब के दीदार की आशा रखता हो उसे चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए) (१८:११०)

ऐ मित्र बाज़ लोग फ़ना और अमले सालेह (सत्कर्ता) की कैफ़ियत से बेख़बर हैं और अपनी बेख़बरी के कारण उन अक़वाल को जो परदा उठाने के विषय में आये हैं उनको दीदारे ख़ुदा की नफ़ी (असिद्ध करने) पर दलील ठहराते हैं और नहीं जानते कि यह केवल ख़ता है। अगर कोई शख़्स यह कहता है कि दुनिया में ख़ुदा का दीदार जाइज़ (उचित) नहीं है और आख़िरत में जाइज़ है तो वह शख़्स अल्लाह तआता को आजिज़ (विवश) ठहराता है, क्योंकि अल्लाह तआला पर किसी चीज़ का इतलाक़ किसी वक़्त भी जाइज़ होता है तो वह तमाम औक़ात में जाइज़ होता है, क्योंकि अल्लाह तआला का कोई वस्फ़ (गुण) हादिस (रचित/नवीन) नहीं है। तमाम उलमाए अहले दीन और साहबे यक़ीन मशाइक़ीन दुनिया में ख़ुदा का दीदार जाइज़ होने पर सम्मत हैं। अहले सुन्नत वल-जमाअत में से कोई भी दुनिया में दीदार जाइज़ होने में इख़तिलाफ़ नहीं करते। बाज़ लोगौं को वाक़े होने में इख़तिलाफ़ है और उनमें से अधिकतर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० को शबे मेराज में

दीदार होने की गवाही देते हैं। हसन बसरी रहे० फ़र्माते हैं कि ''ख़ुदा की क़सम मुहम्मद सल्ला० ने अपने रब को अपनी दोनों आँखौं से देखा है''। पुस्तक *मुग़नी* के लेखक ने इब्ने अब्बास रज़ी० से रिवायत की है कि उन्हों ने कहा कि ''क्या तुमको इस बात पर तअज्जुब है कि ख़ुल्लत (मित्रता) इब्राहीम अले० के लिये हो, कलाम (वार्तालाप) मूसा अले० के लिये हो और दीदार मुहम्मद सल्ला० के लिये हो''। *तफ़सीरे रहमानी* में आयत ولقد راءه نزلة اخرىٰ(النجم۱۳) (और निस्सन्देह मुहम्मद सल्ला० ने ख़ुदा को देखा) के बयान में आया है कि *''यानि देखा अपने रब को जिस समय कि नुज़ूल हुवा उसके नुज़ूले अव्वल के सिवाय''। तफ़सीरे दैलुमी* में आयत ما كذب الفواد ما راى(النجم۱۱) *(झूठ नहीं कहा रसूल के दिल ने जो उसने देखा)* के बयान में लिखा है कि ''यानि नहीं झुटलाया दिल ने और न इन्कार किया और न शक किया उसमें जिसको आप सल्ला० ने देखा और मुशाहदा (अवलोकन) किया बसर (दृष्टि) से अपने रब का, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है افتمارونه على ما يرى (النجم ۱۲) *तो क्या तुम उससे झगड़ते हो उस पर जो वह देखता है?* यानि मुहम्मद सल्ला० ने जो अपने रब की ज़ात - व - सिफ़ात को देखा, उस में शक न करो यह रूयत (दर्शन) नबी सल्ला० की है कि अपने रब को सर की आँख से रूबरु (संमुख) देखा और अल्लाह को दूसरी बार देखा''। ख़ुद मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० भी गवाही देते हैं जैसा कि आपने फ़र्माया कि رايت ربى ليلة المعراج فى احسن صورة मैं ने शबे मेराज में अपने रब को अच्छी सूरत में देखा। एक दूसरी रिवायत में है आँहज़रत सल्ला० से

अबूज़र रज़ी० ने पूछा कि क्या आपने अपने रब को देखा तो आप सल्ला० ने फ़र्माया कि बेशक मैं उसको देखता हूँ। सहाबा रज़ी० के अक़वाल भी रुयत (दीदार) की गवाही देते हैं, जैसा कि उमर रज़ी० ने कहा कि मैं ने नहीं देखा किसी चीज़ को मगर इस हाल में कि मैं ने उसमें अल्लाह को देखा। अली रज़ी० फ़र्माते हैं कि ख़ुदा की क़सम नहीं इबादत की मैं ने अपने रब को जबतक कि मैं ने उसको नहीं देखा। *ज़ाहिदी* में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी० के संबंध में एक घटना बयान की गई है कि अब्दुल्लाह तवाफ़ करने की जगह पर ठहरे हुवे थे और उसमान रज़ी० वहाँ से गुज़रे और सलाम किया लेकिन अब्दुल्लाह ने उत्तर नहीं दिया। उसमान रज़ी० ने उमर रज़ी० से शिकायत की और कहा कि आपके पुत्र अब्दुल्लाह को मैं ने सलाम किया उन्होंने जवाब नहीं दिया। उमर रज़ी० ने अपने पुत्र पर ग़ुस्सा किया और कहा कि तुमने उसमान रज़ी० की फ़ज़ीलत (प्रतिष्ठा) नहीं पहचानी और उनके सालाम का जवाब नहीं दिया। अब्दुल्लाह ने क्षमा मांगी और कहा कि हम उस समय ख़ुदा को देख रहे थे, हम ऐक दूसरे को देख रहे थे, मैं ख़ुदा को देख रहा था और ख़ुदा मुझे देख रहा था, और मैं उस समय अपने आप से और उनके सलाम से बेख़बर था।

क़ुरआन मजीद की अधिकतर आयतें भी इस अर्थ को प्रमाणित करती हैं और इसी के अनुकूल हैं। अल्लाह तआला ने फ़र्माया है فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا(الاعراف۱۴۳) *(फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली (आलोक) डाली तो उसे रेज़ा-रेज़ा कर दिया, और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े)* (७:१४३)।

यह आयत अल्लाह तआला के दीदार के बारे में नस्स (स्पष्ट

प्रवचन) है और इन ही वुजूह से दीदार का इन्कार करने वालों की जहालत ज़ाहिर हो जाती है। इमाम ज़ाहिद ने अपनी तफ़सीर में लिखा है कि ''बाज़ उलमा का यह कहना है कि दुनिया मे अल्लाह का दीदार मुहालात (असंभव चीज़ों में) से है जाइज़ात (उचित चीज़ों में) से नहीं है, उनका यह कहना ग़लत है, इस लिये कि मूसा अले० ने दुनिया में दीदार की इच्छा की, अगर दुनिया में दीदार होना असंभव होता तो (यह मान्ना पड़ेगा कि) मूसा अले० ने कलीमुल्लाह, हबीबुल्लाह और अब्दुल्लाह होने के बावजूद अल्लाह तआला से असंभव चीज़ मांगी, और हम मूसा अले० के संबंध में ऐसी बदगुमानी नहीं करते और न हम किसी नबी के बार में ऐसा गुमान करते। बाज़ उलमा ने आयत كل من عليها فان(الرحمٰن) *(जो धरती पर है फ़ना होने वाला है)* से इस्तिदलाल (प्रमाणित) करते हुवे यह कहा है कि दुनिया में दीदार जाइज़ नहीं, यहा भी उनकी ग़लती है, क्यों कि मूसा अले० को अपनी मौत का यक़ीन था उसके बावजूद उन्होंने दुनिया में दीदार की इच्छा प्रकट की। इस से प्रमाणित हुवा कि दुनिया में दीदार जाइज़ है।'' *तफ़सीरे मदारिक* के लेखक ने आयत لن ترانی के बयान में लिखा है कि ''इसका अर्थ यह है कि ऐ मूसा तुम सवाल करके फ़ानी (नश्वर) आँख से मुझे हरगिज़ न देखोगे, बल्कि हमारे फ़ज़्ल-व-अता (कृपा) से तुम अपनी चश्मे बाक़ी (चिरस्थायी आँख) से हमको देखोगे। हमारी दलील भी यही है, क्योंकि अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़र्माया कि मैं हरगिज़ नहीं देखा जाऊंगा, कि उससे दीदार जाइज़ होने की नफ़ी होजाती''।

ऐ मित्र जानले कि उलमा और मशाइख़ीन भी दीदार के जाइज़ होने की गवाही दे रहे हैं, और आँहज़रत सल्ला० के बाज़ सहाबा भी

आँह़ज़रत सल्ला० से दीदार जाइज़ होने की रिवायत कर रहे हैं। इस लिये जो शख़्स दीदार से इन्कार करेगा और कहेगा कि दुनिया में हरगिज़ दीदार जाइज़ नहीं तो उसका हाल कया होगा और उसका कया नाम रखेंगे और किस गिरोह में उसका शुमार करेंगे। अवश्य उसका शुमार उस गिरोह में होगा जिनके अहवाल की सूचना अल्लाह तआला ने अपने कलाम में इस तरह दी है।

قد خسر الذين كذبوا بلقاء الله حتىٰ اذا جاء تهم

الساعة بغتة قالوا يا حسرتنا على ما فرطنا فيها(الانعام۳۱)

निश्चय ही वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह के दीदार को झुटलाया, जब अचानक उन पर वह घड़ी आ जायेगी तो वे कहेंगे : हाय अफ़सोस हमसे इस बारे में कैसी भूल हुई (६:३१) इसके अलावा क़ुरआन में और बहुत सी आयतें हैं जो दीदार का इनकार करने वालों को धमकी देने पर गवाही दे रही हैं। अल्लाह तआला फ़र्माता है

سنريهم آيا تنا فى الافاق وفى انفسهم حتى يتبين لهم انه الحق اولم يكف بربک انه على كل

شئى شهيد ا لا انهم فى مرية من لقاء ربهم الا انه بكل شئى محيط(حم السجده۵۳،۵۴)

(हम उन्हें अपनी निशानियाँ दिखाएंगे आफ़ाक़ (वाहय क्षेत्रों) में भी और ख़ुद उनके अंदर भी। यहाँ तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह क़ुरआन हक़ है। और क्या यह बात काफ़ी नहीं कि तेरा रब हर चीज़ का गवाह है। सुन लो, यह लोग अपने रब के दीदार में शक रखते हैं, सुन लो, वह हर चीज़ का इहाता (आच्छादन) किए हुवे है) (४१:५३,५४)

ऐ मित्र जानले कि जो शख़्स दुनिया को अपना घर और अपनी पनाह गाह (रक्षास्थान) बनाया हो और अल्लाह तआला की याद और उसकी मुहब्बत और माअरिफ़त से मुंह फेर लिया हो, और उसके ज्ञान

की इन्तिहा (चरमसीमा) इस दरजे पर पहुंची हो कि उसके हर कथन और कर्म का उद्देश्य केवल दुनिया हो तो नाचार (अंततः) ऐसे ही शख़्स के संबंध में (अपने हबीब को) अल्लाह का फ़र्मान होता है कि

فاعرض عن من تولى عن ذكرنا ولم يرد الا الحيوٰة الدنيا ذلک مبلغهم من العلم(النجم۲۹،۳۰)

(पस तुम उससे मुंह फेरलो जो हमारे ज़िक्र से मुंह फेर लिया है, और वह दुनिया के जीवन के सिवा और कुछ न चाहे। उनके ज्ञान की पहुंच यहीं तक है। (५३:२९,३०) *निसाबुल-अख़बार* में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्ला० से सवाल किया गया कि आदमिमों में बड़ा शरीर (दुष्ट) आदमी कौन है? आँहज़रत सल्ला० ने फ़र्माया कि ''(बड़ा शरीर आदमी) आलिम है जब वह फ़साद करने लगे''। आलिम का फ़साद यह है कि इल्म के माध्यम से धन, जाह (वैभव) और मन्ज़िलत (सम्मान) प्राप्त करे। इस विषय में अल्लाह तआला फर्माता है।

فخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتاب ياخذون عرض
لناوان ياتهم عرض مثله يا خذوه(الاعراف۱۶۹)

(फिर उनके पीछे ऐसे नाख़ल्फ़ (अयोग्य) लोगों ने उनकी जगह ली जो 'किताब' के वारिस होकर भी इसी तुच्छ जीवन का सामान समेटते हैं और कहते हैं हमें अवश्य क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि वैसा ही और सामान उनके पास आ जाता है तो उसे भी ले लेते हैं)। (७:१६९)

जिन लोगों के विषय में अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ला० ऐसी सूचना देते हैं तो फिर ऐसे शख़्स को अम्बिया अले०, अल्लाह की किताब और महेदी अले० के साथ क्या उद्देश्य बाक़ी रह जाता है। तमाम पैग़म्बर और उनके तमाम ताबईन अल्लाह की तौहीद और

अल्लाह की माअरिफ़त और महुब्बत की बातें करते हैं और दुनिया (की मुहब्बत) से हटाकर ख़ुदा की इबादत और इताअत की तर्ग़ीब देते हैं, तो यह बातें उन लोगौं (तालिबाने दुनिया) की ख़ाहिशे नफ़्सानी की मुख़ालिफ़ होती हैं, तो यह लोग अवश्य पैग़म्बरौं और उनके ताबईन को झूटे कहते हैं और उनको क़त्ल करदेते हैं। अल्लाह तआला फ़र्माता है।

افكلما جآء كم رسول بما لا تهوى انفسكم استكبرتم ففريقا كذبتم وفريقا تقتلون(البقرة٨٧)

(तो क्या जब-जब तुम्हारे पास कोई रसूल उन बातों को लेकर आयेगा जो तुम्हारे जी को न भा सके, तो तुम अकड़ बैठोगे तो तुमने एक गिरोह को झुटलाया और एक गिरोह की हत्या करते रहे) (२:८७)।

चूंके महेदी अले० रसूलुल्लाह सल्ला० के ताबे हैं और अल्लाह की तौहीद और अल्लाह की माअरिफ़त और मुहब्बत की बात कहते हैं और मख़लूक़ को अल्लाह की तरफ़ बुलाते हैं और तमाम दुनिया वालों से हटाते हैं तो महेदी अले० को भी झूटा कहना तालिबाने दुनिया के लिये आवश्यक है। वे महेदी अले० के हक़ (सत्य) होने के विषय मे ऐसा ही विरोध करते हैं जैसा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० के हक़ होने के विषय में विरोध किये थे, और यह कहा था कि यह मुहम्मद सल्ला० वह नहीं हैं जिनकी सूचना अल्लाह तआला ने हमारी किताब में दी है, और आपके पेश किये हुवे कलामुल्लाह को *असातीरुल - अव्वलीन* (अगले लोगौं की कहानियाँ) कहते थे। कभी आप सल्ला० को जादूगर कहते थे, कभी कवि, कभी मुफ़तरी (दुष्ट) और कभी दीवाना कहते थे। इसी प्रकार की बहुत सी अशोभनीय गुणों से मुहम्मद सल्ला० को संबंधित करते थे, और आप से कज-बहसी (कुतर्क) करते और कहते थे कि हम तुझ पर ईमान

नहीं लाऐंगे जब तक कि तू अपनी नबूवत पर दलील पेश नहीं करेगा और हमको निशान नही बताएगा, जब कि नबूवत की तमाम दलीलें आपकी पवित्र ज़ात में साबित थी और यह लोग न पहचान्ने के कारण इन्कार कर रहे थे। जो दलीलें नबूवत के सुबूत पर दलालत करती हैं, यह हैं कि पूर्वज उलमा ने कहा है कि नबी आदम अले० की नबूवत के तरीक़े माअरिफ़त में उलमा को इख़तिलाफ़ है। मुतकल्लिमीन कहते हैं कि मोजिज़ात का ज़ाहिर होना बाइसे माअरिफ़त होता है। अहले दिल अस्हाब की एक जमाअत कहती है कि नबी का हाल ख़ुद नबी की नबूवत का गवाह होता है, और यह हाल दो चीज़ों पर निर्भर हैः पहली चीज़ मख़लूक़ को ख़ालिक़ की इताअत और माअरिफ़त की तर्ग़ीब देना है, और दूसरी चीज़ मख़लूक़ को दुनिया की तलब से हटाना है। यह दोनों सिफ़तें हमने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० की ज़ात में पाई हैं, क्योंकि आप सल्ला० का पूरा उद्देश्य यही था कि मख़लूक़ को ग़ैरे ख़ुदा की ख़िदमत से छुड़ा कर ख़ुदा की ख़िदमत में लगादेना, और कभी आप सल्ला० ने दुनिया और लज़्ज़ात (हर्ष) और शहवात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया, इस लिये आपका हाल आप की पैग़म्बरी की सत्यता पर दलील है।

महेदी अले० मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला० के ताबे ताम (पूर्ण अनुयायी) हैं, जैसा कि नबी सल्ला० ने फ़र्माया انه يقفو اثرى ولا يخطى यानि *महेदी मेरे नक़शे-क़दम (पद्चिन्ह) पर चलेगा और ख़ता नहीं करेगा।* महेदी अले० की महेदियत के लिये यही प्रमाण काफ़ी है, और यह अलामत मुसलमानों की एक जमाअत ने आप की ज़ात में पाई और तहक़ीक़ (अनुसंधान) की। अहादीस से दूसरे दलाइल भी साबित हुवे हैं। बुख़ारी,

मुसलिम, मसाबीह, मशारिक़ और क़ुर्तुबी में है कि नबी करीम सल्ला० ने फ़र्माया المهدى منى اجلى الجبهة اقنى الانف مقرون الحاجبين *यानि महेदी मुझ से होगा रोशन पेशानी, ऊंची नाक और पैवस्ता अब्रू वाला।* नबी करीम सल्ला० ने यह भी फ़र्माया कि ''वह (महेदी) मेरे नक़्शे-क़दम पर चलेगा और ख़ता नहीं करेगा''। आपने यह भी फ़र्माया कि *''उस (महेदी) से ज़मीन और आस्मान के रहने वाले राज़ी (प्रसन्न और संतुष्ट) होंगे, आस्मान अपनी बारिशों में से कुछ भी बाक़ी रखे बग़ैर पानी बरसाएगा, और ज़मीन अपनी नबातात में से कुछ बाक़ी रखे बग़ैर सब कुछ उगादेगी, यहाँ तक कि ज़िन्दा लोग मुरदों की इच्छा करेंगे''।* अहले तहक़ीक़ उलमा (अन्वेषण करने वाले विद्यावानों) ने इस हदीस की शर्ह (व्याख्या) यह की है कि महेदी अले० के हुस्ने अख़लाक़ (सद्व्यवहार) से तमाम फ़िरिश्ते, परीयाँ और मानवजाति राज़ी हो जायेंगे, आपके ज़माने में अल्लाह तआला आस्मान और ज़मीन से तमाम रहमत के दर्वाज़े खोल देगा, और तमाम सलाहियत (योग्यता) रखने वालों के दिलों पर अल्लाह के फ़ैज़ की कामिल बारिश होगी, और उनके दिलों में अल्लाह की तौहीद और माअरिफ़त के जितने भी बीज होंगे वह सब उगेंगे, और हयात (जीवन) का असर उनकी ज़ातों में पैदा होगा, यहाँ तक कि वे आर्ज़ू करेंगे कि काश इस ज़मान में हमारे मुरदे जीवित होते। नबी करीम सल्ला० ने फ़र्माया* قال النبى ﷺ

بلاء يصيب هذه الامة حتى لا يجد الرجل ملجاء يلجاء اليه

فيبعث الله رجلا من اهل بيتى اسمه اسمى

इस उम्मत पर एक आज़माइश (परीक्षा) होगी यहाँ तक कि किसी को

कोई पनाहगाह (परिश्रय) नहीं मिलेगी जिस में वह पनाह ले सके (इस भयंकर हालत को दूर करने के लिये) पस अल्लाह तआला मेरी अहले बैत से एक मनुष्य को मब्रूऊस (नियुक्त) करेगा उसका नाम मेरा नाम होगा।

کیف تهلک امتی انا فی اولها وعیسیٰ فی آخرها والمهدی من اهل بیتی فی وسطها

कैसे हलाग होगी मेरी उम्मत जब कि मैं उसके अव्वल में हूँ, ईसा अले० उसके अंत में हैं और मेरी अहले बैत से महेदी अले० उसके मध्य में हैं।

لولم یبق من الدنیا الا یوم واحد لطول الله ذلک الیوم حتی یبعث رجلامن عترتی فیملا به الارض قسطا وعدلا کما ملئت جوراً وظلماً

यदि दुनिया समाप्त होने में एक दिन भी बाक़ी रह जाये तो अल्लाह तआला उस दिन को इतना लम्बा करेगा कि मेरी आल में से एक मनुष्य को मब्रूऊस (नियुक्त) करेगा जो धरती को अदल और इन्साफ़ (न्याय) से भरदेगा जैसा कि वह जैर-व-ज़ुल्म (अत्याचार) से भरी गयी थी।

الا ایها الناس انما انا بشر مثلکم یوشک ان یا تینی رسول ربی فاجیب وانا تارک فیکم ثقلین اولهما کتاب الله تعالیٰ فیه النور والهدیٰ فخذوا بکتاب الله واستمسکوا به واهل بیتی اذکر کم الله فی اهل بیتی اذکر کم الله فی اهل بیتی

सूनो ऐ लोगो मैं तुम्हारे ही जैसा मनुष्य हूँ, क़रीब है कि मेरे पास मेरे रब का क़ासिद (दूत) आये और मैं उसकी दाअवत को स्वीकार करूं (मेरी रेहलत क़रीब है), और मैं तुम में दो बड़ी भारी चीज़ों को छोड़कर जारहा हूँ, उनमें से एक अल्लाह की किताब है जिसमें नूर और हिदायत है, पस तुम अल्लाह की किताब को लो और उसको मज़्बूत पकड़े रहो, और दूसरी मेरी अहले बैत, मैं अपनी अहले बैत में तुमको अल्लाह को याद दिलाता हूँ, मैं अपनी अहले बैत में तुमको अल्लाह को याद दिलाता

हूँ।

आँहज़रत सल्ला० ने अबूज़र रज़ी० से फ़र्माया कि मिस्कीन अबूज़र अकेला चल रहा है और अल्लाह आस्मान में अकेला है और अबूज़र धरती पर अकेला है। ऐ अबूज़र तुम अकेले के लिये अकेला होजाओ, बेशक अल्लाह जमील (सुंदर) है जमाल (सुंदरता) को पसन्द करता है। फिर आँहज़रत सल्ला० ने फ़र्माया ऐ अबूज़र क्या तुम जानते हो कि मेरा ग़म और मिरी फ़िक्र (चिन्ता) क्या है और मुझे किस बात का शौक़ है, तो आप सल्ला० के अस्हाब रज़ी० ने कहा कि या रसूलुल्लाह आप हमको बताइये कि आप को किस बात की चिन्ता है। आप सल्ला० ने फ़र्माया कि आह! मेरे भाइयौं से मुलाक़ात का शौक़ है। आप सल्ला० के अस्हाब ने कहा कि हम आपके भाई हैं। आप ने फ़र्माया कि तुम मेरे अस्हाब हो और वे मेरे भाई हैं जो मेरे बाद होने वाले हैं, उनकी शान अम्बिया अले० की शान जैसी होगी और वे अल्लाह के पास शहीदों के मर्तबे में होंगे, अल्लाह की प्रसन्नता के लिये वे अपने माता, पिता, भाई, बहन और बच्चौं से भागें गे और वे अल्लाह तआला के लिये धन-दौलत को तर्क करदेंगे, उनकी इन्किसारी (विनीति) ऐसी होगी कि अपने - आप को हक़ीर (तुच्छ) समझेंगे, वे शहवतौं और दुनिया की बेकार बातौं में रग़बत (रुचि) नहीं रखेंगे। वे आल्लाह तआला के घरौं में किसी एक घर में जमा रहेंगे। अल्लाह की मुहब्बत के कारण दु:खी रहेंगे और उनके दिल अल्लाह की ओर लगे रहेंगे और उनका रिज़्क़ आल्लाह की ओर से होगा, उनका हर काम केवल अल्लाह के लिये होगा। उनमें से कोई एक बीमार होगा तो अल्लाह के पास उसकी बीमारी हज़ार वर्ष की इबादत से अफ़ज़ल होगी। ऐ अबूज़र अगर तुम चाहो तो

मैं और भी कुछ कहना चाहता हूँ, अबूज़र रज़ी० ने कहा क्यों नहीं या रसूलुल्लाह, आप सल्ला० ने फ़र्माया कि उनमें से कोइ मरेगा तो उसकी मौत आस्मान में रहने वालों की मौत की मानिंद होगी, क्योंकि अल्लाह के पास उनकी प्रतिष्ठता ऐसी ही है। ऐ अबूज़र अगर तु चाहो तो मैं कुछ और कहना चाहता हूँ, अबूज़र रज़ी० ने कहा, क्यों नहीं या रसूलुल्लाह सल्ला०, रसूलुल्लाह सल्ला०, ने फ़र्मायाा अगर उनमें से किसी एक के कपड़े में से कोई जूँ उसको काटे तो अल्लाह के पास सत्तर हज्ज और ग़ज़वों (धर्म युद्ध) का सवाब मिलेगा, और औलादे इसमाईल अले० के चालीस ग़ुलामौं को मुक्त करने का सवाब मिलेगा, उनमें से हर ऐक बारह हज़ार के मुक़ाबले का होगा। ऐ अबूज़र अगर तुम चाहो तो मै कुछ और कहना चाहता हूँ, अबू ज़र रज़ी० ने कहा क्यों नहीं या रसूलुल्लाह सल्ला०, रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्मायाा उनमें से एक अपने बाल-बच्चों को याद करेगा फिर दुःखित होगा तो उसकी हर साँस के बदले मे हज़ार-हज़ार दर्जे मिलेंगे। रसूलुल्लाह सल्ला० ने फिर फ़र्माया कि उनमें का एक अपने अस्हाब के साथ दो रकात नमाज़ पढ़ेगा तो वह अल्लाह के पास उस आदमी से अफ़ज़ल है जो नूह अले० की हज़ार वर्ष की आयु पा कर कोहे लेबनान में अल्लाह की इबादत करता हो। रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया ऐ अबूज़र अगर तुम चाहो तो मैं कुछ और कहना चाहता हूँ, अबूज़र रज़ी० ने कहा क्यों नहीं या रसूलुल्लाह, आप सल्ला० ने फ़र्माया कि उनमें से एक तसबीह पढ़ेगा तो बेहतर है उसके लिये कियामत के दिन इस बात से कि उसके साथ दुनिया के पहाड़ सोना बन कर चलें। रसूलुल्लाह सल्ला० ने फिर फ़र्माया कि जो शख़्स उन लोगौं में से किसी एक के घर की ओर एक नज़र भी देखेगा तो वह अल्लाह

के पास बैतुल्लाह को देखने से ज़ियादा महबूब होगा, और अगर कोई शख़्स उनमें से किसी एक को देखेगा तो गोया वह अल्लाह को देख रहा होगा, और जो शख़्स उनमें से ऐक की सत्र-पोशी करेगा (कपड़े पहनाएगा) तो गोया उस ने अल्लाह की सत्र-पोशी की, और अगर उनमें से किसी एक को खाना खिलाएगा तो गोया उसने अल्लाह को खाना खिलाया। रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया ऐ अबूज़र अगर तुम चाहो तो मैं कुछ और कहना चाहता हूँ, अबू-ज़र रज़ी० ने कहा क्यों नहीं या रसूलुल्लाह सल्ला०, तो रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि उनके पास ऐसे लोग बैठेंगे जो बार-बार गुनाह किये होंगे और गुनाहों से भरे हुवें होंगे, जब वे उनके पास से उठने लगेंगे तो अल्लाह तआला उनको नज़रे रहमत से देखेगा और अल्लाह के पास उनकी करामत (श्रेष्ठता) के कारण उन बैठने वालौं के पापौं को अल्लाह क्षमा करदेगा। ऐ अबूज़र रज़ी० उनका हंसना इबादत है, और उनकी ख़ुश तबई (सुशीलता) तसबीह है और उनकी नींद ज़कात है। अल्लाह तआला हर दिन उनको सत्तर दफ़ा नज़रे रहमत से देखता है। ऐ अबूज़र रज़ी० मैं उनके दीदार का मुश्ताक़ (इच्छुक) हूँ। फिर रसूलुल्लाह सल्ला० ने थोड़ी देर तक अपने सर को झुका लिया फिर अपना सर उठाया और रोने लगे यहाँतक कि आप सल्ला० की दोनों पवित्र आँखों से आंसू बहने लगे, और फ़र्माया कि मुझे उनके दीदार का क्या ही शौक़ है। रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह उनकी रक्षा कर और उनके मुख़ालिफ़ीन के मुक़ाबले में उनकी मदद् फ़र्मा और क़ियामत के दिन उनके दीदार से मेरी आँख ठंडी फ़र्मा, और आप सल्ला० ने यह आयत पढ़ी

الا ان اولیاء الله لا خوف علیهم ولا هم یحزنون (یونس٦٢)

(सुनो। अल्लाह के मित्रों को न तो कोई भय होगा, और न वे दुःखी होंगे) (१०:६२)

यह हदीसें महेदी अले० के संबंध में आई है। पूर्वज उलमा ने इन अहादीस को तवातुर के दर्जे में रखा है, जैसा कि *क़ुर्तुबी* में आया है कि महेदी अले० के संबंध में नबी करीम सल्ला० से जो हदीसें रिवायत की गई हैं वह तवातुर की हद (सीमा) को पहुंच चुकी हैं और उनके रावी अधिक हैं। बाज़ हदीसें जो एक - दूसरी की *विपरित* हैं उनकी तत्बीक़ (अनुकूलता) पूर्वज उलमा ने इस प्रकार की है कि महेदी अले० का आना हक़ (सत्य) है और अलामतौं (लक्षण) में इख़तिलाफ़ (भिन्नता) है, जैसा की *शोअबुल- ईमान* मे कहा गया है कि

واختلف الناس فی امر المهدی فتوقف جماعة واحالوا العلم الی عالمه واعتقدوا انه احد من اولاد فاطمة بنت رسول الله ﷺ یخرج فی اخر الزمان

यानि लोगौं ने महेदी अले० के विषय में इख़तिलाफ़ किया है, और एक जमाअत ने तवक़्क़ुफ़ (अनिश्चय) किया है और वास्तविक ज्ञान का हवाला वास्तविक विद्यावान अल्लाह तआला की ओर किया है और यह एतक़ाद रखा है कि महेदी अले० रसुलुल्लाह सल्ला० की प्रिय पुत्री फ़ातिमा रज़ी० की सन्तान में से एक है जो अंतिम काल में निकलेगा। *शर्हुल मक़ासिद* में लिखा है कि

فذهب العلماء الی انه امام عادل من ولد فاطمة رضی الله عنها یخلق الله متی شاء ویبعثه نصرة لدینه

उलमा की यह राय है कि महेदी अले० फ़ातिमा रज़ी० की सन्तान में से इमामे आदिल हैं, अल्लाह जब चाहेगा उनको पैदा करेगा और अपने दीन की नुसरत के लिये उनको मब्ऊस (नियुक्त) करेगा।

महेदी अले० के संबंध में दूसरी बहुत सी रिवायतें आई हैं। *फ़ुतूहाते*

मक्किया में लिखा है।

الا ان ختـــــــم الاوليـــــــــــاء شهيـــــــد وعيـــن امـــــام الـــعـــــارفيــــن فـــقيـــد
هـــو السيـــد الـــمهـــدى مـــن آل احـــمـــد هـــو الـــصـــــارمِ الهـــنـــدى حيـــن يبيـــد
هـــو الشـــمـــــس تـــجـلـــو كـــل غيـــم وظـلـــمة هـــوالـــوابـــل الـــوســـمـــى حيـــن يـــجيـــد

सूनो बेशक ख़ातिमुल - औलिया मौजूद होने वाला है
और उस इमामुल-आरिफ़ीन की नज़ीर नहीं है
वह सैयद महेदी है जो अहमद की सन्तान से होगा
वह हिन्दी तल्वार है जिस समय वह मिटाएगा (विदअतौं को)
वह सूर्य है जो हर तारीकी और अंधेरे को दूर करदेता है
वह मोटे बूंदौं वाली मौसमी बारिश है (फ़ैज़ की) जब बरस्ता है।

हज़रत अमीरुल - मोमिनीन अली इब्न अबी तालिब रज़ी० ने फर्माया है।
ऐ मेरे बेटे जब तुर्क हमला करें तो महेदी का इन्तेज़ार कर
महेदी की विलायत स्थापित होगी और वब न्याय करेगा
आले हाशिम में से सलातीने ज़मीन अपमानित होंगे
औह बैअत किया जाएगा उनमें से वह जो निर्बल और उत्साह हीन होगा
बच्चौं में से एक बच्चा होगा जो निर्विचार होगा
उसके पास न कोई कोशिष होगी और न वह साहबे अक़्ल होगा
फिर तुम में से ऐक हक़ को क़ाइम करने वाला ज़ाहिर होगा
और हक़ के साथ तुम्हारे पास आएगा और हक़ पर अमल करेगा
वह रसूलुल्लाह सल्ला० का हम-नाम होगा मेरी जान उसपर फ़िदा हो
ऐ मेरे बच्चो। तुम उसको मत छोड़ो और बैअत करने में जलदी करो।

यह औसाफ़ (गुण) जो इन अहादीस और रिवायात में साबित हुवे हैं वह सैयद मुहम्मद महेदी अले० की ज़ात में पैदा हैं, इनमें कोई इख़तलाफ़ नहीं है, क्योंकि महेदी अले० को भेजने में अल्लाह का उद्देश्य यह है कि दीने ख़ुदा की नुसरत करे और उस ज़ात के माध्यम से लोग

अल्लाह की तौहीद (एक मान्ना) और अल्लाह की माअरिफ़त (ब्रइमज्ञान) प्राप्त करें। दूसरी अलामतें (लक्षण) जिनमें भिन्नता है वह उद्देश्य (अल्लाह की तौहीद और माअरिफ़त की दाअवत) के विरुद्ध हैं। अगर वह महेदी अले० में न पाई जाएं, और केवल उन अलामतौं के कारण यदि कोई व्यक्ति उस ज़ात को झूटा कहे और उसका विरोध करे तो वह अपने-आप पर ज़ुल्म करता है, क्योंकि महेदी अले० फ़र्माते हैं कि मैं जो कुछ करता हूँ, और जो कुछ कहता हूँ, उस सूचना के माध्यम से है जो मुझको ख़ुदा से पहुंचती है। आप ने इस दाअवे के सुबूत पर अल्लाह की किताब से दलील लाई है, और यह दो हाल से ख़ाली नहीं है, या तो वह सच कह रहे हैं या झूट कह रहे हैं। यदि झूट कह रहे हैं तो उसका ज़रर (हानि) और वबाल (आपत्ति) उनकी ज़ात पर है कि ज़ालिम (अन्यायी) हैं, और अगर यह सच कह रहे हैं तो हानि और आपत्ति झुटलाने वालौं पर है, कि यह लोग अधिक अन्यायी हैं, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है

فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا او كذب بآياته انه لا يفلح المجرمون (یونس ۱۷)

(फिर उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूट गढ़े या उसकी आयतौं को झुटलाये। निश्चय ही अपराधी लोग सफल नहीं हो सकते। (१०:१७)

وان یک کاذبا فعلیه کذبه وان یک صادقا یصبکم بعض الذی یعدکم (المومن ۲۸)

(यदि वह झूटा है, तो उसके झूट का वबाल उसी पर पड़ेगा, और यदि वह सच्चा है, तो जिसकी वह तुम्हें धमकी दे रहा है उसका कुछ न कुछ हिस्सा तुम पर आ कर रहेगा (४०:२८)।

इस आयत को अल्लाह तआला ने मोमिनौं के दिल की तसल्ली और तर्ग़ीब के लिये उतारा है, क्योंकि हर ज़माने में अल्लाह तआला ने रसूल को जो भेजा है तो उस ज़माने के लोगौं ने इख़तिलाफ़ किया, और झुटलाने वालौं ने मोमिनौं पर तानाज़नी (तिरस्कार) की और विरोध किया और कहा कि तुम किस लिये झूटे की बात पर विश्वास करते हो हलाक होजावगे। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि ऐसा नहीं है, बल्कि ख़ुदा का एहसान सादिक़ौं (सत्य वादी) पर है जो ख़ुदा के लिये ख़ुदा के रसूल के आज्ञाकारी हुवे, और उसके झूट का नुक़सान उन पर आइद नहीं होता है। यदि ख़ुदा का रसूल अपने दाअवे में सच्चा है तो ख़ुदा की नेमत के वादे सादिक़ौं के लिये हैं। पस तालिबाने हक़ और साहिबाने अक़ल के लिये इतना ही काफ़ी है। अल्लाह तआला ने साहिबाने अक़ल (बुद्धिमान) के अहवाल की सूचना अपने कलाम में दी है।

ربناانا سمعنا منادیا ینادی للایمان ان آمنوا بربکم فآمنا (آل عمران ۱۹۳)

(हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले को ईमान की ओर बुलाते सुना कि अपने रब पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये। (३:९३) महेदी अले० भी तमाम मुनादियों में से एक मुनादी (उद्घोषी) हैं और यही निदा (आवाहन) करते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ। जब बुद्धिमान लोगौं ने महेदी अले० की यह निदा सुनी तो देखा कि मुख़्बिरे सादिक़ (सच्चे सूचक) हैं और उनकी निदा हक़ है, पस वे तुरंत इताअत करने वाले होगये, और कहा कि हम ईमान लाये।

ऐ मित्र जानले कि जिस को अल्लाह तआला ने इस महेदियत के

दाअवे का अहल (योग्य) बनाया हो, और उसके अक़्वाल और अफ़आल (कथन और कर्म) उसके कमाल (परिपूर्णता) पर दलालत करते हों, तो यही बात उसकी तस्दीक़ वाजिब करने वाली है, जो उसकी ज़ात में पाई जारही है। उसके तमाम अहवाल और अफ़आल अल्लाह की पुस्तक (पवित्र क़ुरआन) और उसके रसूल सल्ला० के साथ मुवाफ़िक़ हैं। अब जो व्यक्ति हसद (डाह) और इनाद (द्वैष) के कारण ऐसी ज़ात से शत्रुता रखेगा और विरोध करेगा, तो वह व्यक्ति अल्लाह की पुस्तक और अल्लाह के रसूल सल्ला० का विरोधी होगा, और पूर्वज उलमा की सम्मति से बाहर होजायगा, क्योंकि पूर्वजों की सम्मति इस बात पर है कि जो हुक्म किताब और सुन्नत से साबित हुवा हो, वह तस्दीक़ को वाजिब करने वाला होता है। ईमान के विषय में पूर्वज उलमा के विचार यही हैं।

मक़सदे सानी

इस विषय में कि क्या ईमान बढ़ता और घटता है। इस को एक जमाअत ने साबित किया है और दूसरौं ने उसकी नफ़ी (नकार) की है। इमाम राज़ी रहे० और बहुत से मुतकल्लिमीन ने कहा कि यह बहस लफ़्ज़ी है, क्योंकि यह ईमान की तफ़सीर की फ़र्अ (शाखा) है। अगर हम यह कहें कि ईमान से मुराद तस्दीक़ (साक्ष्यंकन) है तो ईमान घटने और बढ़ने को स्वीकार नहीं करता, क्योंकि यक़ीन ही वाजिब है, और उसमें कमी या ज़ियादती को स्वीकार करने की योग्यता नहीं है, न उसकी ज़ात के एतबार से और न उसके मुतअल्लिक़ के एतबार से, क्योंकि तफ़ावुत (विभेद) नक़ीज़ * के एहतिमाल (विपरीत की आशंका) को कहते हैं, और वह आशंका चाहे बईद तरीन वज्ह (दूरवर्ती कारण) के

साथ हो, यक़ीन के मुनाफ़ी (प्रतिकूल) है और यक़ीन और आशंका एक साथ जमा नहीं हो सकते। मुतअल्लिक (संबंधित) के अनुसार इस लिये नहीं कि तमाम वह चीज़ें रसूलुल्लाह सल्ला० के लाने से आवश्यक मानी गई हैं और जमीअ (सम्पूर्ण) इस हैसियत से कि वह सम्पूर्ण हैं, उसमें एक से अधिक होने की कल्पना नहीं होसकती, वरना वह सम्पूर्ण नहीं होगा। अगर हम यह कहते हैं कि (ईमान) आमाल (कर्म) का नाम होगा या आमाल और तस्दीक़ का नाम होगा, पस ईमान दोनों को स्वीकार करेगा। यह ज़ाहिर है और सत्य यह है कि तस्दीक, ज़ियादती और कमी को स्वीकार करती है दो करणों से, यानि ज़ात के अनुसार और मुतअल्लिक़ के अनुसार। ज़ात के अनुसार इस लिये कि वह क़ुव्वत (बल) और ज़ोफ़ (दुर्बलता) को स्वीकार करती है, क्योंकि तस्दीक़ कैफ़ियाते नफ़सानिया (मन सम्बन्धी अवस्था) से है, इस लिये बल और दुर्बलता के अनुसार विभेद रखने वाली है। तुम्हारा यह कहना कि वाजिब वही यक़ीन है, और विपरीत होने की आशंका के बग़ैर विभेद नहीं होता, तो हम उसको स्वीकार नहीं करते कि विभेद केवल उस आशंका के कारण है, क्योंकि जाइज़ है कि विपरीत होने की आशंका के बग़ैर बल और दुर्बलता से भी (विभेद) होसकता है। फिर वह बात (विभेद) जिसका तुमने ज़िक्र किया है, उसका तक़ाज़ा यह है कि नबी सल्ला० और उम्मती का ईमान एक (समान) हो जाए, और यह बात इज्माअन् बातिल है (सर्वसम्मति से असत्य है)। वह क़ौल जिसका तुम ने ज़िक्र किया है वह सहीह नहीं है, क्योंकि मसावाते मज़्कूरा का मुक़तज़ी है,

* नक़ीज़ का अर्थ यह है कि घटना और बढ़ना दोनों एक - दूसरे के विपरीत हैं, इस लिये जितना घट सकता है उतना ही बढ़ सकता है।

और हज़रत इब्राहीम अले० का कौल जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने अपने पवित्र कलाम में किया है, तुम्हारा क़ौल उसके ख़िलाफ. पड़ता है, यानि

قال بلى ولكن ليطمئن قلبى (البقرة٢٦٠)

(कहा ईमान तो रखता हूँ परन्तु चाहता हूँ कि मेरे दिल को इतमीनान हो जाये (२:२६०)। यह आयत तस्दीके यक़ीनी के ज़ियादती को क़ुबूल करने पर दलालत करती है, जैसा कि पहले हम ने उसको साबित किया है।

ज़ाहिर यह है कि ज़ने ग़ालिब (प्रबल विचार) जिस के साथ विपरीत की आशंका दिल में नहीं गुज़रती है, उसके ईमाने हक़ीक़ी होने के एतबार से उसका हुक्म भी यक़ीन का हुक्म है, क्योंकि अधिकतर आम लोगौं का ईमान इसी प्रकार का होता है। इस बिना पर तस्दीक़े ईमानी खुल्लम - खुल्ला तौर पर ज़ियादती को क़ुबूल करेगी। अब रहा तफ़ाउत (विभेद) के कारणौं में से दूसरा कारण यानि मुतअल्लिक़ (संबंधित चीजौं) के एतबार से, तो उस सूरत में भी तुम्हारा क़ौल सहीह नहीं है, क्योंकि तस्दीक़े तफ़सीली (विस्तार पूर्वक साक्षंयकन) कही जाती है अफ़राद * पर उस चीज़ के जिसके ज़रीए उसका आना मालूम हुवा हो, इस हाल में कि वह ईमान का भाग होती है, और उस पर सवाब दिया जाता है तस्दीक़े इज्माली के सवाब के साथ। मत्लब यह है कि जिन चीज़ौं को रसूलुल्लाह सल्ला० ने लाया है वह अनेक हैं और तस्दीक़े इज्माली में दाख़िल हैं। जब उनमें से एक चीज़ मालूम होगई और ख़ास तौर पर उसकी तस्दीक़ करली गई तो यह तस्दीक़ ज़ियादा होती है

उस तस्दीक़े मुजमल (संक्षिप्त साक्ष्यंकन) की और ईमान का एक भाग होती है।

इस बात में शक नहीं है कि तस्दीक़ाते तफ़सीली (विस्तारपूर्वक साक्ष्यंकन) ज़ियादती को स्वीकार करते हैं, पस इसी प्रकार ईमान बी ज़ियादती (वृद्धि) को स्वीकार करता है, और पवित्र क़ुरआन की आयतें भी इस को प्रमाणिक करती हैं, जैसाकि अल्लाह तआला फ़र्मता हैं واذا تليت عليهم آياته زادتهم ايمانا(الانفال۲) *(और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जायें तो वे उनके ईमान को और बढ़ा देती* है (८:२)। यह आयत भी ईमान के ज़ियादती और कमी को स्वीकार करने को प्रमाणिक करती है, दूसरे कारण (मुतआल्लिक़) के साथ, जैसा कि फ़र्माने ख़ुदा ''ताकि मेरे दिल को ईतमीनान होजाय'', दलालत करता है ज़ोफ़ और क़ुव्वत को क़ुबूल करने पर पहले कारण (ज़ात) के साथ, और मुवाफ़िक़ है उसकी शर्ह के साथ, लेकिन आमाल (कर्म) यानि ताअतें ख़ुद बढ़ती हैं, और ईमान न बढ़ता है, न घटता है, तो उसके जवाब के लिये कुछ मक़ामात है जिनको समझने की ज़रूरत है। पहला मक़ाम यह है कि आमाल ईमान में दाख़िल नहीं हैं, क्योंकि ईमान की हक़ीक़त तस्दीक़ है। एक कारण यह भी है कि किताब और सुन्नत में ईमान माअतूफ़ अलैहि, और अमले सालेह माअतूफ़ आया है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है ان الذين امنوا وعملوا الصالحات(البقرة۲۷۷) *(निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये और नेक कर्म किये* (२:२७७)। ईमान को सेहते आमाल

* मसलन् क़ियामत की तस्दीक़, फ़िरिश्तों की तस्दीक़, रसूलों की तस्दीक़ वग़ैरह, यह अफ़राद हैं, और हर एक चीज़ की तस्दीक़ ईमान का भाग है, जितनी चीजों की तस्दीक़ करेगा उतना ईमान बढ़ेगा, अगर नहीं करागा तो ईमान घटेगा।

(मर्मों की शुद्धि) की शर्त क़रार दिया गया है, और शर्त अपने मश्रूत से अलग होती है, जैसा कि अल्लाह का फ़र्मान है

ومن يعمل من الصالحات من ذكر ا وانثىٰ وهو مومن (النساء۱۲۴)

(और जो कोई नेक काम करेगा, चाह वह पुरुष हो या स्त्री, बशर्ते कि वह मोमिन हो (४:१२४)। इस आयत में निश्चित रूप में यह बात है कि मश्रूत शर्त में दाख़िल नहीं होता, क्योंकि कोई चीज़ अपने - आप की शर्त नहीं बन सकती।

बाज़ आमाल को छोड़ने वालों के लिये भी ईमान साबित हुवा है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़र्माता है।

وان طآئفتان من المومنين اقتتلوا فاصلحوا بينهما (الحجرات۹)

(और यदि ईमान वालों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें, तो उनके बीच सुलह करा दो (४९:९)।

इस आयत में उनका ईमान निश्चित रूप से साबित है, क्योंकि कोई चीज़ अपने रुकन के बग़ैर साबित नहीं होती। गुप्त न रहे कि यह वुजूह उनही लोगों के मुक़ाबले में हुज्जत हो सकते हैं जो ताअतों को हक़ीक़ते ईमान का रुकन (स्थंब) क़रार देते हैं, इस हैसियत से कि आमाल को छोड़ देने वाले उनके पास मोमिन नहीं होते, जैसा कि मोतज़िला की राय है। उन लोगों के मुक़ाबले में हुज्जत नहीं होते जिन का मज़्हब यह है कि आमाल ईमाने कामिल का रूकन हैं, इस हैसियत से कि आमाल को छोड़ेने वाला हक़ीक़ते ईमान से ख़रिज नहीं होता, जैसा कि इमाम शाफ़ई रहे० का मज़्हब है। इस से पहले मोतज़िला के दलाइल जवाबात के साथ गुज़र चुके हैं।

दूसरा स्थान यह है कि ईमान की हक़ीक़त न घचती है न बढ़ती

है, क्योंकि पहले गुज़र चुका है कि तस्दीक़े क़लबी (हार्दिक पुष्टि) वह है जो जज़्म-व-इज़आन (दृढ़ता और आज्ञापालन) की सीमा को पहुंचती है। यह ऐसी बात है कि उसमें ज़ियादती और नुक़सान का तसव्वुर नहीं होसकता, यहाँ तक कि जिस को हक़ीक़ते तस्दीक़ हासिल हो जाती है तो चाहे वह ताअत (आज्ञापालन) करे या पाप करे, उसकी तस्दीक़ उसी हाल में बाक़ी रहती है, उसमें परिवर्तन नहीं होता। वह आयतें जो ईमान की ज़ियादती पर दलालत करती हैं, वह इस बात को ज़ाहिर करती हैं जिसका ज़िक्र अबू हनीफ़ा रहे० ने किया है कि लोग किसी क़दर ईमान लाये थे, फिर् एक फ़र्ज़ के बाद दूसरा फ़र्ज़ आता था, वे हर फ़र्ज़ पर ईमान लाते थे इस प्रकार ईमान ज़ियादा होता था, उस चीज़ की ज़ियादती से जिस से ईमान वाजिब होता है। नबी सल्ला० के ज़माने के बाद इस चीज़ का तसव्वुर नहीं किया जा सकता। इस बात में बहस हैं, क्योंकि फ़राइज़ की तफ़सीलात की सूचना नबी सल्ला० के ज़माने के बाद भी संभव है, और ईमान इज्माली मालूमात (संक्षिप्त ज्ञान) में इज्मालन वाजिब होता है, और तफ़सीली मालूमात हो तो तफ़सीली ईमान ज़ियादा बल्कि अकमल (पूर्णतम) होता है। वह जो बयान किया गया है कि इज्माली ईमान अपने दर्जे से नहीं गिरता है, तो यह बात असल ईमान से मुत्तसिफ़ होने में है। कहा गया है कि उस इज्माली ईमान पर सबात और दवाम (दृढ़ता और निरंतरता) हर पल ईमान की ज़ियादती है, और उसका नतीजा यह है कि ज़मानौं की ज़ियादती से ईमान भी ज़ियादा होता है, क्योंकि वह (ईमान) अर्ज़ है जो तजद्दुद और अमसाल के सिवाय बाक़ी नहीं रहता। इस में भी बहस है, क्योंकि एक चीज़ के माअदूम (नष्ट) होने के बाद मिसाल का हासिल होना किसी चीज़ की ज़ियादती

से नहीं होता, जैसा कि शरीर के सवाद में है।

बाज़ उलमा ने कहा है कि ईमान की ज़ियादती से मुराद उसके समर (प्रतिफल) की ज़ियादती, और उसके नूर का इश्राक़ (चमक) और दिल में उसकी रोश्नी है, क्योंकि वह आमाल से बढ़ती है और पाप से घटती है । जिन का मज़्हब यह है कि आमाल ही ईमान हैं तो ईमान का ज़ियादती और कमी को स्वीकार करना ज़ाहिर है। इसी कारण कहा गया है कि यह विषय ताअत (आज्ञापालन) के ईमान से होने के विषय की फ़र्अ (शाखा) है। बाज़ मुहक़्क़िक़ीन ने कहा है कि हम तसलीम नहीं करते कि तस्दीक़ की हक़ीक़त ज़ियादती और कमी को स्वीकर नहीं करती, बल्कि वह क़ुव्वत और ज़ोफ़ में कम या ज़ियादा होती है, क्योंकि यह बात निश्चित है कि एक उम्मती की तस्दीक़ नबी सल्ला० की तस्दीक़ के समान नहीं होती। इसी लिये इब्राहीम अले० ने फ़र्मया कि *'ताकि मेरे दिल को इतमीनान होजाये।'* यहाँ दूसरी बहस भी है, वह यह है कि बाज़ क़दरियह का मज़्हब यह है कि ईमान माअरिफ़त का नाम है। हमारे उलमा ने इसके फ़साद पर इत्तेफ़ाक़ किया है, क्योंकि अहले किताब मुहम्मद सल्ला० की नबुव्वत की ऐसी ही माअरिफ़त रखते थे जैसा कि अपनी औलाद की माअरिफ़त (ज्ञान) रखते थे। उसके बावजूद उनके तस्वीक़ न करने के कारण उनके कुफ़्र का यक़ीन है, और इस कारण भी कि बाज़ कुफ़्फ़ार हक़ की अवश्य माअरिफ़त रखते थे लेकिन वे शत्रुता और अहंकार के कारण इनकार करते थे। अल्लाह तआला फ़र्माता है।

وجحدوا بها واستيقنتها انفسهم ظلما وعلوا (النمل ۱۴)

(और उन्होंने आयतों का इंकार किया हालांकि उनके दिलों ने उन आयतों का यक़ीन कर लिया था, ज़ुल्म और घमंड की वजह से (२७:१४)।

पस अहकाम की माअरिफ़त और उन पर यक़ीन रखना और उनकी तस्दीक़ और उनपर एतक़ाद के फ़र्क़ का बयान ज़रुरी है, ताकि सानी (तस्दीक़ और एतक़ाद) का ईमान होना, न कि पहला यानि अहकाम की माअरिफ़त और उन पर यक़ीन का ईमान होना सहीह हो जाये।

इमाम क़ुशैरी - अबुल क़सिम अब्दुल करीम बिन हवाज़न जन्म ३७६ हिज्री / ९८६ मृत्यु ४६५ / १०७२ लेखक रिसाला क़ुशेरिया।

इमाम ज़ाहिद - इमाम ज़ाहिद अबू नसर अहमद बिन हसन ५१९ / ११२५ में तफ़सीर लिखी ।

इमाम बुख़ारी - अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इसमाईल बुख़ारी, जन्म १९४ / ८१० मृत्यु समरक़ंद २५६ / ८७० हाफ़िज़े क़ुरआन, हदीस में अल जामे अस-सहीह के लेखक।

इमाम बैहक़ी - अबू बक्र अहमद, शाफई, हाफ़िज मुहद्दिस, फ़क़ीह, जन्म ३८४ / ९९४, मृत्यु नेसापूर ४५८ / १०६६ । शाबुल - ईमान के लेखक।

इमाम शाफ़ई - अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरीस साफ़ई, जन्म ग़ज़ा १५० / ७६७ मृत्यु मिसर २०४ / ८१९ ।

इमाम राज़ी - अबू अब्दुल्लाह फ़ख़रुद्दीन राज़ी, लक़ब शेख़ुल इसलाम, तफ़सीर कबीर के लेखक, जन्म तबरिसतान ५४४ / ११५० मृत्यु हिरात ६०६ / १२१० ।

इमाम मुस्लिम - अबुल हुसेन मुस्लिम बिन हज्जाज, महान मुहद्दिस, अनेक पुस्तकों के लेखक, जन्म नेशापूर २०६ / ८२१, मृत्यु २६१ / ८७५ ।

इब्ने अब्बास - अब्दुल्लाह बिन अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, नबी करीम सल्ला० के चचा-ज़ाद भाइ, महान मुफ़स्सिरे क़ुरआन, मृत्यु ६८ / ६८७ ।

अबूज़र - अबूज़र जंदब बिन जनादा बिन क़ैस ग़फ़्फ़ारी, महान सहाबी, मुहद्दिस, विद्यावान, तारिकुद् - दुनिया, मृत्यु ३१ / ६५१ ।

हसन बसरी - अबू सईद हसन बसरी - ताबई, जन्म मदीना २१ / ६४२ मृत्यु बसरा ११० / ७२८ ।

क़ुर्तुबी - इमास अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद बिन अबू बक्र अन्सारी क़ुर्तुबी, जन्म क़ुर्तुबा (इसपेन), महान मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, फ़क़ीह, मृत्यु मिसर ६७२/१२७३।

शर्ह मक़ासिद - लेखक साअदुद्दीन मसऊद बिन उमर, तफ़ताजानी अरबी और फ़ारसी भाषा में अनेक पुस्तकों के लेखक। जन्म तफ़ताज़ान ७२२ / १३२२ मृत्यु समसर्क़द ७९१ / १३८९ ।

तफ़सीरे मदारिक - लेखक अबुल-बरकात अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन महमूद नसफ़ी-महान मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, फ़क़ीह, तफ़सीर मदारिकुत-तन्ज़ील, कंज़ुद-दक़ाइक और अनेक पुस्तकौं के लेखक मृत्यु ७१० हिज्री ।

मसबीहुस-मुन्नह - लेखक अबू मुहम्मद हुसेन बिन मसूद बग़वी, जन्म ४३५ हिज्री, मृत्यु ५१६ महान मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, क़ारी। तफ़सीर मअलिमुत-तन्ज़ील और अनेक पुस्तकौं के लेखक ।

मशारिक़ुल-अनवा - लेखक शेख़ रज़ीउद्दीन अबुल फ़ज़ाइल हसन बिन मुहम्मद साग़ानी,मुहद्दिस, फ़क़ीह, जन्म ५७७ हिज्री, मृत्यु ६५० ।

इदारे की प्रकाशित पुस्तकें

१) हक़ीक़ते तरके दुन्या (उर्दु)
- हज़रत मौलाना सैयद मीरांजी आबिद ख़ुंदमीरी

२) हक़ीक़ते ज़िक्र (उर्दु)
- हज़रत मौलाना सैयद मीरांजी आबिद ख़ुंदमीरी

३) अल - कुरआन वला महेदी (उर्दु)
- मौलाना अब्दुल हकीम तदबीर रहे०

४) रिसाला हज़्दह आयात (हिन्दी)
- मियाँ अब्दुल ग़फ़ूर सजावंदी रहे०

५) ख़ुलासतुल कलाम (हिन्दी)
- मियाँ शेख़ अलाई रहे०

६) ख़सराइसे हमाम महेदी अले० (हिन्दी)
- मियाँ अब्दुल मलिक सजावंदी रहे०

७) अक़ीदा शरीफ़ा , बाज़ल आयात , अल-मेआर (हिन्दी)
- हज़रत बन्दगी मियाँ सैयद ख़ुंदमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी०

८) मक्तूबे मुल्तानी (हिन्दी)
- हज़रत बन्दगी मियाँ सैयद ख़ुंदमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी०

९) मजालिसे ख़म्सा (हिन्दी)
- मियाँ शेख़ मुस्तफ़ा गुजराती रहे०

१०) चरग़े दीने नबवी (हिन्दी)
- हज़रत सय्यद पीर मुहम्मद रहे०